श्रीदक्षिणामूर्तये नमः

पुस्तकसूची / CATALOGUE

प्रारम्भ/W.E.F–1.4.2023

श्री दक्षिणामूर्ति मठ प्रकाशन

SHRI DAKSHINAMURTI MATH PRAKASHAN

D-49/9, MISHRA POKHARA, VARANASI-221010.

UTTAR PRADESH (INDIA).

डी-४९/९, मिश्र पोखरा, वाराणसी-२२१०१०.

उत्तर प्रदेश (भारत).

आ शैलादुदयात्तथाऽस्तगिरितो भास्वद्यशोरश्मिभि-
र्व्याप्तं विश्वमनन्धकारमभवद्यस्य स्म शिष्यैरिदम् ।
आराज्ज्ञानगभस्तिभिः प्रतिहतश्चन्द्रायते भास्कर-
स्तस्मै शङ्करभानवे तनुमनोवाग्भिर्नमस्स्यात्सदा ॥

श्रीसुरेश्वराचार्याः

YOUR ATTENTION PLEASE

कृपया ध्यान दें

Note:

- Booksellers are normally given a rebate of 25% on cash payment.
- पुस्तक विक्रेताओं को सामान्यतः नगद भुगतान पर 25% कमीशन दिया जाता है ।

पुस्तक	मूल्य(रु)	प्र.सं.
अद्वैतसिद्धिः भाग-१	१५०/-	३८
अद्वैतसिद्धिः भाग-२	१५०/-	३८
अद्वैतसिद्धिः भाग-३	१५०/-	३९
अद्वैतसिद्धिः भाग-४	२००/-	{५६}
अद्वैतसिद्धिः भाग-५	१२५/	{५६}
अद्वैतसिद्धिः-लघुचन्द्रिका	७५/-	३७
अध्यात्मपटल	८०/-	४१
अनुभूतिप्रकाश (सम्पूर्ण)	१५००/-	४५
अमृत-पथ	१४०/-	२९
आत्मपुराणम् भाग-१	२००/-	१५
आत्मपुराणम् भाग-२	३२०/-	२७
आत्मपुराणम् भाग-३	३९०/-	२८
आत्मपुराणम् भाग-४	२८०/-	२८
आत्मबोध	५०/-	५३
आत्मविज्ञान एवं संक्षिप्त वेदान्त विचार	८०/-	४७
इन्ट्रोडक्शन्स टू वेदान्त (अं.)	५०/-	६०
ईशावास्योपनिषद्	२०/-	२३
उपनिषद्भाष्यम् भाग-१	५००/-	५८
उपनिषद्भाष्यम् भाग-२	शीघ्र	५९
उपनिषद्भाष्यम् भाग-३	५००/-	५९
ऑवर धर्म (अं.)	३०/-	२३
कठोपनिषद् भाग-१	६०/-	२०
कठोपनिषद् भाग-२	१६०/-	३२
केनोपनिषद्भाष्यद्वयम्	३००/-	१५
गीता प्रवेश	२०/-	१९
गीता भाष्य (सं.) (दोनों भाग)	५००/-	४३

गौडपादसार भाग-१	२५०/-	१३
गौडपादसार भाग-२	२५०/-	१३
चरम-लक्ष्य	४०/-	२१
चिदानन्दलहरी	१५०/-	४२
जीवनयज्ञ (अं.)	३०/-	१७
ज्ञान-साधना	४०/-	२०
ज्ञानांकुशम्	७०/-	४१
तत्त्वानुसन्धानम्	३००/-	१२
तर्कसंग्रहसर्वस्वम्	७०/-	४४
दशशान्तयः	५०/-	१७
दहरविद्या (हिं. कथा)	३०/-	४३
दहरविद्या-प्रकाशिका	३५/-	८
देव्यथर्वशीर्ष	७०/-	५०
देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र तथा आत्मार्पणस्तुति	७०/-	३५
नाद ब्रह्म	६०/-	४४
नैष्कर्म्यसिद्धिः	२००/-	१४
पञ्चदशी	११००/-	४९
पञ्चपादिका (मूलमात्रम्)	१००/-	४२
पञ्चप्रक्रिया	१००/-	५३
पञ्चाक्षरी विद्या	२५/-	३४
पञ्चीकरण (सं. एवं हिं.)	३०/-	४०
परमात्मप्राप्ति के सोपान	२००/-	५२
पराविद्या	शीघ्र	५५
पुरुषसूक्त (दोनों भाग)	२९०/-	३०
पुरुषोत्तमयोग	शीघ्र	५८
बालव्युत्पत्ति	६०/-	३५
बृहदारण्यकसम्बधभाष्यवार्तिक (सं. एवं हिं.)	२७०/-	२४
बोधक दृष्टान्त	५०/-	५७
बोधसार (सं. एवं हिं.)	४५०/-	५१

मधुकैटभवध एवं दुर्गासप्तशती सार	१७०/-	४८
मनीषा-पञ्चक (सं. एवं हिं.)	६०/-	८
मन्त्रराजप्रकाश-कैवल्योपनिषद्	२०/-	२२
मानव और समाज	५०/-	३३
मानवता की ओर	४०/-	२१
मानसोल्लास माधुरी	५०/-	७
मानसोल्लासः (सं. टीका)	५०/-	३४
मुण्डक-प्रश्न-उपनिषद्	१५०/-	१०
रुद्र	१००/-	९
रुद्राष्टाध्यायी (सं. सटीक)	१००/-	५१
लघुवासुदेवमननम् एवम् सिद्धान्तबिन्दुः	१२०/-	२९
लेक्चर्स ऑन वेदान्त (अं.) (८-पुस्तक)	३०/-	१८
वचनामृत	३०/-	२२
वाक्यवृत्ति	८०/-	२८
विवरणोपन्यासः	१८५/-	२४
वेदान्ततत्त्वविवेकः	१२५/-	२५
वेदान्तपरिभाषा	२०/-	३६
वेदान्तसारः	२००/-	३६
व्यक्तित्व का विकास	३०/-	१९
शक्तिपूजा	७०/-	३२
शरीरकमीमांसाभाष्यम् भाग-१ (ब्रह्मसूत्र)	३६०/-	३१
शरीरकमीमांसाभाष्यम् भाग-२ (ब्रह्मसूत्र)	४२०/-	३१
शाण्डिल्यविद्या	१००/-	५४
शिवसहस्रनामसंग्रह	८५/-	३३
शिव आरती	६८/-	४८
शिवतत्त्वरहस्यम् एवं शिवोत्कर्षमंजरी	६०/-	४६
शिवभक्तविलासः	१२५/-	२७
शिवसंकल्पसूक्त	२७५/-	५२

शिवानन्दलहरी	५०/-	१०
शिवानन्दलहरी-प्रवचन	१००/-	४०
शिवाष्टोत्तरशतनाम	६०/-	१६
श्रीकृष्ण-सन्देश (गीता हिं.)	९००/-	३६
श्रीमद्भागवत महापुराणम् भाग-१	५००/-	५४
श्रीरामचर्चा	८८/-	४८
श्रीशिवमहिम्नःस्तोत्रम् की प्रवचनात्मक व्याख्या	१६०/-	५५
श्वेतकेतुविद्या	१२०/-	४७
श्वेताश्वतर-उपनिषद्	५०/-	११
संसरण एवं उससे सुरक्षा	१००/-	५०
सदाचार	१०/-	५७
सद्वचन	५०/-	५७
साधन नवनीत	१००/-	५८
साधन संग्राम भाग-१	१००/-	९
साधन संग्राम भाग-२	४०/-	११
साधन संग्राम भाग-३	११०/-	३०
साधना	५०/-	३३
सूतसंहिता भाग-१, २	३२०/-	२६
स्तुतिकदम्बः (सं.)	५०/-	७
स्तुतिकदम्ब (सं. एवं हिं.)	२४०/-	१२
स्तुतिसंचयः	२२०/-	४५
स्वानुभवादर्श	९०/-	५६
हिन्दी बोधसार	१५०/-	५३

श्रीदक्षिणामूर्तिसंस्कृतग्रन्थमाला

ŚRĪ DAKṢHIṆĀMŪRTI-SAṀSKṚTA-GRANTHAMĀLĀ

१ – **स्तुतिकदम्बः** (संस्कृत)

सं : निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 8+194 मूल्य : 50.00

प्रस्तुत 'स्तुतिकदम्ब' नित्य पाठ का ग्रन्थ है। वैदिक धर्म केवल बुद्धिविलास नहीं, दैनंदिन जीवन का पाथेय और मार्गदर्शक है। वैदिक धर्म में परमेश्वर के निष्क्रिय-निर्गुण और सक्रिय-सगुण दोनों रूपों का प्राधान्य है। इसी समन्वय को इस संग्रहमें प्रस्तुत किया गया है। यह स्तोत्रसंग्रह संस्कृत भाषा में ही है, तथापि सभी स्तोत्रों की भाषा अति प्राञ्जल एवं प्रासादिक होने से पाठ के साथ ही अर्थ का मनन सहज ही होता रहता है। इसके पाठ से सभी में एक नवीन दृष्टि उत्पन्न होने के साथ मानसिक तेज भी जाग्रत् होगा, जो अब हमें भारतीय राष्ट्र के नव-निर्माणार्थ अत्यधिक अपेक्षित है। शांकरग्रंथावलि में प्रकाशित स्तोत्र एवं लघुप्रकरणों में से चुने एवं अन्य विशिष्ट स्तोत्र, शिवसहस्रनाम, ललितासहस्रनाम आदि को इसमें संकलित किया है। श्लोकानुक्रमणिका से ग्रंथ का उपयोग बढ़ गया है।

२ – **मानसोल्लास-माधुरी** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 82+419 मूल्य : 50.00

भगवत्पाद आचार्य के भाष्यग्रन्थ वेदान्त के उत्तम अधिकारियों के लिए सर्वथा उपयुक्त हैं। सर्वज्ञ आचार्य ने मध्यम सामान्य जिज्ञासुओं के लिए वेदान्त के रमणीय प्रकरणों व स्तोत्र ग्रन्थों का ग्रथन किया।

प्रस्तुत दशश्लोकात्मक श्रीदक्षिणामूर्तिस्तोत्र उसी श्रृंखला की एक कड़ी है। भगवत्पाद श्री शंकराचार्य के प्रधान शिष्य श्रीसुरेश्वराचार्य ने इस पर 'मानसोल्लास' नामक वार्त्तिक की रचना की। संस्कृत भाषा की ओर पराङ्मुखता देखकर पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज ने इस पर 'माधुरी' नामक हिन्दी व्याख्या की रचना की। श्रीदक्षिणामूर्तिस्तोत्र, मानसोल्लास वार्तिक, स्तोत्र व वार्त्तिक का पदच्छेद, अन्वय, अन्वयार्थ और विस्तृत प्रतिपद व्याख्या से विभूषित यह मानसोल्लासमाधुरी अत्यन्त सुन्दर और उपादेय बन गयी है। मूल दशश्लोकी पर 'तत्त्वसुधा' संस्कृत व्याख्या परिशिष्ट में दी है। श्लोकों का अकाराद्यनुक्रम अनुसंधान में उपयोगी होगा।

३ – **दहरविद्याप्रकाशिका** (संस्कृत)

लेखक : परमशिवेन्द्र सरस्वती

सं : निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 26+84 मूल्य : 35.00

लगभग साढ़े तीन सौ वर्ष पुराना यह लघुकाय ग्रन्थरत्न श्रुति, स्मृति, इतिहास, पुराण में विहित दहरोपासना की विशद प्रामाणिक मीमांसा ही नहीं साथ में अनुष्ठानरीति का संक्षेप व विस्तार में प्रकाश करने वाला आलोक भी है। ब्रह्मसूत्र, छांदोग्य, तैत्तिरीय, कैवल्य आदि में बिखरे विषयों को एक सन्दर्भ में व्यवस्थित कर पुराणादि वचनों से उपबृंहित करना ग्रंथकारकी अनुपम विशेषता है। सम्पादक की विस्तृत हिंदी भूमिका से उपासकों को पूर्ण मार्गदर्शन उपलब्ध हो जायेगा।

४ – **मनीषापंचक** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 77 मूल्य : 60.00

अद्वैतात्मा के साक्षात्कार के बल पर व्यक्त किया निज निश्चय ही यह भगवत्पादीय पंचक है। यद्यपि यह एक मौके पर तत्काल प्रकट किये उद्गार हैं तथापि आचार्य की सहज व्यवस्थित विचारशैली के कारण

साधकों के सदा स्मरणीय विषय इसमें संकलित हैं। अनुवादक ने अत्यन्त गंभीर दार्शनिक साधनामय विवेचन संश्लिष्ट भाषा में अभिव्यक्त किया है जिससे कलेवर स्वल्प होने पर भी तलस्पर्शी विचारों से परिपूर्ण है। श्री सदाशिवेन्द्र योगी तथा श्री बालगोपालेन्द्र मुनि विरचित संस्कृत टीकाएँ परिशिष्ट मे मुद्रित हैं।

५ – **रुद्र** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 10+638 मूल्य : 100.00

वेदादि सकलशास्त्रों में एकमात्र सर्वप्रपञ्चोपशम परमात्मा का, जो शिव, रुद्र, महेश्वर आदि नामों से व्यवहृत है, स्तवन किया गया है। सारे भूमण्डल में शिवलिङ्ग पूजा के प्राचीनतम अवशेष उपलब्ध होते हैं। वास्तव में वैदिक यज्ञ में वेदि ही योनि है तथा अग्नि ही ऊर्ध्वलिङ्ग है। ज्ञान में मन ही त्रिशक्तिरूप होने से योनि है तथा ब्रह्माभास ही व्यापक होने से लिङ्ग है। भक्ति में जीव योनि और शिव लिङ्ग हैं। इसी प्रकार पृथ्वी ही योनि और सूर्य लिङ्ग है। न जाने क्यों, अनेक भारतीय भाषाओं में, विशेषतया हिन्दी में, ये दोनों शब्द केवल दैहिक अर्थविशेषों के लिए रूढ हो गये हैं। इस रूढि से हमारे शास्त्रों एवं पूज्य पदार्थों के घृणित अर्थ कुछ नास्तिकों एव विदेशियों ने प्रसारित किये। इन निरर्थक बातों के निराकरण तथा श्रीरुद्राध्याय के याथातथ्य के प्रकाशन के लिए विस्तृत व्याख्या मुमुक्षु जनों को अपरिमित आनन्द देगी। सम्पूर्ण नमकाध्याय का मंत्रार्थ एवं उसके प्रथम सात मंत्रों पर व्याख्यान, इतना ही विषय इस ग्रन्थ में संकलित हो सका है।

६ – **साधन संग्राम भाग-१** (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 8+480 मूल्य : 100.00

माण्डूक्योपनिषत् के सात मंत्रों का सतत सरित्प्रवाहतुल्य व्यास-

प्रधान प्रांजल भाषा में आगम-निगम शास्त्रों के गहन चिन्तन से किया गया यह प्रवचन पाठकों को आत्मीय शान्ति अवश्य प्रदान करेगा तथा नवीन दृष्टि से प्राचीन सिद्धान्तों पर विचार करने का मार्ग प्रशस्त करेगा। आधुनिक मनोविज्ञान, समाज-शास्त्र आदि की समालोचना-पूर्वक अद्वैता-नुसारी दिशानिर्देश इस व्याख्यान का वैशिष्ट्य है। बौद्धिक मानस और कायिक सभी स्तरों पर वेदान्तसाधना का संग्राम लड़कर अज्ञानशत्रु के उन्मूलन के लिये यह साधक को प्रेरित व उत्साहित करने वाला अमूल्य ग्रंथ है।

७ – **मुण्डक-प्रश्न-उपनिषद्** (संस्कृत एवं हिन्दी)
आनन्दगिरिटीकाघटित शाङ्करभाष्यानुवाद
अनुवादक श्री स्वामी स्वयंप्रकाश गिरि

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 464 मूल्य : 150.00

प्रस्थानत्रयीभाष्य का चौथाई अर्थ ही बिना आनन्दगिरि टीका के स्पष्ट होता है। हिन्दी में शायद प्रथम बार आचार्य आनन्दगिरि की टीकायुक्त शांकरभाष्य का कोई अंश प्रकाशित हुआ है। इस संस्करण में मुण्डक व प्रश्न उपनिषदों के सम्पूर्ण शांकरभाष्य का अनुवाद, आनन्द-गिरिटीका का अनुवाद, विस्तृत व्याख्यात्मक व विवेचनात्मक टिप्पणी तथा दोनों उपनिषदों की व्याख्यारूप विद्यारण्यकृत 'अनुभूतिप्रकाश' के सम्बद्ध अध्यायों का अनुवाद है।

८ – **शिवानन्दलहरी** (संस्कृत एवं हिन्दी)
आचार्य श्रीशंकरभगवत्पाद
व्याख्याता-श्री स्वामी स्वयंप्रकाश गिरि
प्राचीन संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्या

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 18+125+54 मूल्य : 50.00

स्मार्त सिद्धान्त के अनुसार वर्णित व अनुष्ठित भक्ति का सूत्रात्मक प्रकाशन आचार्य शंकर के इस स्तोत्र में सुलभ है। वैष्णव मार्ग से स्वतंत्र औपनिषद राजपथ की पद्धतियों में भक्ति सर्वप्रधान है।

पुराणों के वर्णनों को हठात् वैखानसादि आगमों के प्रकाश में देखने का रिवाज सा चल पड़ा है, जिससे 'भक्ति' शब्द प्रायः वैष्णवमतानुसारी बिम्ब ही उपस्थित करने लगा है। आचार्यकृत इस विस्तृत स्तोत्र पर शास्त्रीय प्रक्रिया से विशद विवेचन कर हिन्दी भाषा में स्मार्त भक्ति का प्रामाणिक वर्णन करने का प्रयास है। श्लोकों का संगतिप्रदर्शन पूर्वक दण्डान्वय, अनुवाद तथा व्याख्यान प्रांजल भाषा में उपलब्ध है। अज्ञातकर्तृक एक संक्षिप्त अक्षरार्थ प्रकाशित करने वाली संस्कृत टीका परिशिष्ट में एकत्र है। टिप्पणी में छंद अलंकारों का उद्धार किया है।

९ – **श्वेताश्वतरोपनिषद्** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 20+512 मूल्य : 50.00

श्वेताश्वतर शाखा के मन्त्र, ब्राह्मण व आरण्यक भाग अभी तक उपलब्ध नहीं हो सके हैं, केवल यह उपनिषद् मात्र उपलब्ध है। केवलाद्वैत शिवतत्त्व का प्रतिपादन करते समय यह उपनिषद् सांख्यों के प्रकृतिवाद, योगियों के 26-तत्त्ववाद, पुरुष, ज्ञ, प्रकृति, प्रधान व्यक्त, अव्यक्त, गुण, लिङ्ग, भाव आदि पारिभाषिक शब्दों की उद्गमस्थली भी है। जगत्कारण, ब्रह्मज्ञान के साधन, ध्यान के अङ्ग, कुण्डलिनीयोग, आसन, प्राणायाम, प्रणव एवं दक्षिणामूर्ति की उपासना, शिवतत्त्वस्वरूप इत्यादि विषयों का वैविध्य ग्रन्थ के सूचीपत्र से जाना जा सकता है।

इस उपनिषद् की अन्वयार्थसहित विशद टीका की कमी पूरी कर पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज ने मोक्षमार्ग के पथिकों का अहैतुक उपकार किया है। ‘अजामेकां.....’ इत्यादि विवादास्पद मंत्रों का ऊहापोहपूर्वक परिशीलन विद्वानों के लिए भी विचारप्रवर्तक सिद्ध होगा।

१० – **साधन संग्राम भाग-२** (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 8+93 मूल्य : 40.00

श्वेताश्वतरोपनिषत् प्रथमाध्याय के बारहवें मंत्र की–'एतज्ज्ञेयं नित्यमेवात्मसंस्थं..' इत्यादि की गुणोपसंहारन्याय से कथाआख्यायिकाओं द्वारा अलंकृत प्रवचन रूप यह व्याख्या गूढ उलझे विषयों का अत्यंत सरलीकृत प्रभावपूर्ण प्रकाशन है। सुरुचिपूर्ण मनोहर अधुनातन पुरातन दृष्टान्तों के माध्यम से समझाया गया होने के कारण वेदांतविषय इस पुस्तक द्वारा आबालवृद्ध सभी के लिये सुगम्य हो गया है।

११– तत्त्वानुसन्धानम्-अद्वैतचिन्ताकौस्तुभः (संस्कृत एवं हिन्दी)

ग्रन्थकार : श्रीमहादेवानन्दसरस्वती

अनुवादक : श्री पं. गजानन शास्त्री मुसलगाँवकर

आकार : 23x36/8 पृष्ठ : 32+424 मूल्य : 300.00

अठारहवीं सदी का यह प्रकरण अद्वैतदर्शन के सर्वांगीण परिचय तथा साधनापद्धति की समग्र शिक्षा पाने का अतुल्य स्रोत है। वेदान्तदर्शन में प्रचलित सभी प्रक्रियाओं का, प्रमाणों का, ख्यातियों का, उपक्रमादि लिंगों का, प्रामाण्यका, वासनाक्षय-मनोनाश का, समाधिका एवं ऐसे ही अनेक तत्त्वों का आधिकारिक विवरण ग्रंथकार ने मूल व स्वोपज्ञ व्याख्या में प्रस्तुत किया है। विद्वान् अनुवादक ने विषय को स्पष्ट करते हुए सटीक ग्रंथ का भाषान्तरण किया है। श्रीस्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज ने भूमिका में इतिहासक्रम से वेदान्तसाहित्य के विकास का अपूर्व प्रदर्शन किया है जो अनुसन्धान क्षेत्र के विद्वानों के लिये अत्यंत उपयोगी है।

१२ – स्तुतिकदम्ब (संस्कृत एवं हिन्दी)

सं : निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

अनुवादक : श्री थानेशचन्द्र उप्रैती (सांख्ययोग-साहित्याचार्य)

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 12+488 मूल्य : 240.00

ग्रंथमाला के प्रथम पुष्परूप से प्रकाशित स्तुतिकदम्ब के 63 ग्रंथों का अन्वय सहित अर्थ इसमें प्रकाशित है जिससे स्तोत्रों का

अर्थज्ञानपूर्वक पाठ कर भक्तजन कृतार्थ हों। शिवपादादिकेशान्त, केशादिपादान्त आदि दुरूह स्तोत्रों का अनुवादक ने सरल भाषा में अर्थ व्यक्त कर दिया है। जीवन्मुक्तानन्दलहरी, प्रौढानुभूति, सदाचारानुसंधान आदि रहस्यमय प्रकरण वेदान्तरसिकों के लिए अनुवाद सहित उपलब्ध हैं।

१३ – **गौडपादसार भाग-१** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x26/8 पृष्ठ : 19+535 मूल्य : 250.00

मुमुक्षुओं की विमुक्ति के लिये एक माण्डूक्य को पर्याप्त बताया जाता है जिसका वास्तविक महत्त्व उसकी व्याख्याभूत कारिकाओं द्वारा श्रीमद् गौडपादाचार्य ने अभिव्यक्त किया। अजातवाद का औपनिषद रहस्य माण्डूक्यकारिकाओं में यौक्तिक प्रकार से भी उद्घाटित हुआ है। तात्कालिक न्यायपद्धति के परिप्रेक्ष्य में ग्रंथ को अमूल्य माना जाता है पर दार्शनिक मर्यादाओं के उपेक्षक आलोचक इसके औपनिषदत्व पर शंका उठाते हैं। ब्रह्मविद्वरिष्ठ व्याख्याता ने अत्यन्त सरल भाषा में उपनिषद् व कारिकाओं के शांकरभाष्य का सरस व्याख्यान उपस्थित किया है जिससे ग्रंथ का पंक्तिशः अर्थ तो लगता ही है, गूढ आशय, ऊह-अपोह, आधुनिक शंकाओं के समाधान एवं मुमुक्षूपयोगी साधनानिर्देश भी प्रभूत उपलब्ध हो जाते हैं। प्रथम भाग में उपनिषत् सहित आगमप्रकरण की व्याख्या है। भूमिका में विधुशेखर भट्टाचार्य आदि के आक्षेपों का सप्रमाण निराकरण तथा उपपत्ति के उपयोग पर विशिष्ट प्रकाश डाला गया है।

१४ – **गौडपादसार भाग-२** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x26/8 पृष्ठ : 3+536 से 1089 मूल्य : 250.00

माण्डूक्यकारिका के वैतथ्य, अद्वैत एवं अलातशान्ति प्रकरणों की प्रत्येक कारिका का भाष्यानुसारी विस्तृत व्याख्यान इस द्वितीय भाग

में उपलब्ध है। बोल-चाल की भाषा में इस गंभीरतम दुरूह ग्रंथरत्न का आशय यों प्रकट किया है कि शास्त्रज्ञ इसके सहारे आनंदगिरि आदि टीकाओं का अभिप्राय समझ लें एवं साधारण जिज्ञासु बिना बौद्धिक क्लेश के श्रवण-मनन सम्पन्न कर वह वेदान्त दृष्टि पा ले जिससे वह अपना सारा जीवन साधनामय बना सके। भाष्यकार द्वारा दिखाई दिशा में व्याख्याता ने आधुनिक चिन्तनों का भी विश्लेषण कर अद्वैत की विजय पताका फहराई है। विषय-सूची से ग्रंथप्रवेश सरल बनाया है।

१५ – **नैष्कर्म्यसिद्धिः** (संस्कृत एवं हिन्दी)
श्रीचित्सुखाचार्यकृत भावतत्त्वप्रकाशिका सहित
सानुवाद-सम्पादक : डॉ. श्री स्वामी प्रज्ञानानन्द सरस्वती
(वेदान्ताचार्य, व्याकरणतीर्थ)

आकार : 20x26/8 पृष्ठ : 32+432 मूल्य : 200.00

श्रीसुरेश्वराचार्यविरचित नैष्कर्म्यसिद्धि 'अशेष-वेदान्त-सार-संग्रह-प्रकरण' है। समग्र वेदान्त दर्शन को गागर में सागर की तरह 423 श्लोकों में भर दिया है। प्रथम अध्याय में मोक्षविषय में पूर्वमीमांसा की स्थापनाओं का शास्त्र-युक्ति पूर्वक मार्मिक खण्डन है। महावाक्यार्थ सुनकर भी समझ क्यों नहीं आता? इसका उत्तर और समझने का उपाय द्वितीयाध्यायका विषय है । वाक्यों का व्याख्यान करने के लिये तीसरा अध्याय है। चौथे अध्याय में विशिष्ट स्पष्टीकरण सहित पूर्वोक्त विषय को संक्षेप में समझाया है।

इस आचार्यकृति पर विश्वविख्यात चित्सुखाचार्य द्वारा कृत भावतत्त्वप्रकाशिका टीका प्रथम बार मुद्रित हुई है। स्वामी प्रज्ञानानन्द सरस्वती ने टिप्पणी, विषयानुक्रम, श्लोकसूची आदि से ग्रंथ को अलंकृत किया है, अनुवाद द्वारा ग्रंथाशय को विस्तार से एवं सन्दर्भान्तरप्रदर्शन से जो स्पष्ट किया है उससे हिन्दी व्याख्या भी एक टीका बन पड़ी है जिससे हिंदी-वेत्ता ही नहीं संस्कृतज्ञ भी लाभ उठा सकते हैं।

१६ – **केनोपनिषद्भाष्यद्वयम्** (संस्कृत एवं हिन्दी)

हिन्दी व्याख्या : श्री स्वामी स्वयंप्रकाश गिरि

आकार : 23x36/8 पृष्ठ : 352 मूल्य : 300.00

सामवेदीय केनोपनिषत् का माहात्म्य इसी से आकलित कर सकते हैं कि प्रातः स्मरणीय आचार्य ने उस पर दो भाष्यों की रचना की। यद्यपि दोनों भाष्य परस्पर पूरक हैं तथापि कुछ आलोचक उनमें विसंगति दिखाने का प्रयास करते हैं। एक अनुपम प्रयोग के रूप में इस संस्करण में दोनों भाष्यों को इस तरह संपादित किया है कि दोनों मिलकर एक ग्रंथ के रूप में सहजता से पढ़े समझे जा सकते हैं। यद्यपि अक्षराकार-भेद से दोनों भाष्य मुद्रित हैं तथापि उनके वाक्य-वाक्यांशों को एक-दूसरे में संग्रथित कर दिया है जिससे एकग्रंथता का प्रभाव मिलता है। उद्देश्य है कि भाष्यों में मतभेद नहीं है यह सुस्पष्ट हो तथा केनोपनिषत् का प्रतिभाष्यानुसारीके स्थान पर भाष्यानुसारी अर्थ व्यक्त हो जाये। शीर्षक देकर भाष्य को विभक्त किया गया है। भाष्य का अनुवाद तथा विस्तार से व्याख्यान है। परिशेषमें शंकरानंदी दीपिका दी गयी है।

१७ – **आत्मपुराणम् - प्रथम भाग** (संस्कृत एवं हिन्दी)

श्री शंकरानन्द सरस्वती

संस्कृत टीका : श्रीरामकृष्ण

हिन्दी व्याख्याता : श्री स्वामी दिव्यानन्द गिरि

आकार : 23x36/8 पृष्ठ : 444 मूल्य : 200.00

उपनिषद्रत्न कहलाने वाला आत्मपुराण प्रस्थानत्रयी के अनूठे व्याख्याता श्रीशंकरानंद स्वामी की ऐसी हृदयग्राही दिव्य कृति है कि इसके अवलोकन से बड़े-बड़े विद्वानों को भी लगता है कि अब तक उपनिषदों के रहस्यों से हम अनभिज्ञ ही रहे ! सभी प्रधान उपनिषदों के ब्रह्मविद्या-भाग को विविध प्रकारों से गुणोपसंहारपूर्वक अत्यंत रोचक ढंग से और पूर्ण विस्तार से सुस्पष्ट समझाया गया है। यह श्लोकमय टीका

दर्शन के कठिनतम बिन्दुओं को खेल-खेल में समझा देती है। श्रीविश्वेश्वराश्रम के शिष्य श्रीरामकृष्ण पंडित ने 'सत्प्रसव' नामक टीका से इस वरिष्ठ ग्रंथ के प्रत्येक आयाम पर भरपूर प्रकाश डाल कर इसे सहजबोध्य बनाने की असीम कृपा की है। सुप्रतिष्ठित विद्वान् श्री स्वामी दिव्यानन्द गिरि जी ने टीकार्थ समेत पुराण को हिन्दी में प्रस्तुत किया है व आवश्यक स्पष्टीकरणों से अपनी कृति को ऐसा तैयार किया है कि स्वयं अध्ययन करने वाले इसके अनुशीलन से ग्रंथ पर अधिकार पाने में सक्षम हो सकते हैं।

प्रथम भाग में ऐतरेयोपनिषत् तथा कौषीतकी उपनिषत् के इन्द्र-प्रतर्दन संवाद एवं गार्ग्य-अजातशत्रु संवाद के व्याख्यानरूप प्रथम तीन अध्याय प्रकाशित किये जा रहे हैं।

१८ – **शिवाष्टोत्तरशतनाम** (संस्कृत एवं हिन्दी)
भास्करराय कृत शिवनामकल्पलतालवाल सहित
हिन्दी व्याख्या : श्री स्वामी स्वयंप्रकाश गिरि जी

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 14+212 मूल्य : 60.00

शिवरहस्योक्त शिवाष्टोत्तरशतनाम धार्मिक महत्ता सहित अर्थ-गांभीर्य के लिए विदित है जिसमें यही पर्याप्त प्रमाण है कि भास्कर राय जैसे उद्भट विद्वान् ने इस पर कलम उठायी। उन्होंने प्रत्येक नाम की व्याख्या एक-एक पद्य में की है और हर पद्य नवीन छंद में रचित है। आगम-निगम-पुराण-तन्त्र-इतिहास-तीर्थक्षेत्रादि अनेक विविध विषयक ज्ञानों का यह आकर छन्दःशास्त्र की भी मूल्यवान् निधि हो गया है। हिन्दी व्याख्यान में नामक्रम पर विचार करते हुए पहले श्री स्वामी महेशानंदगिरि जी महाराज कृत संक्षिप्त टीका दी गयी है, फिर नामों के अभिप्राय समझाकर भास्कर राय कृत श्लोकों का अनुवाद और यथासंभव मूलप्रदर्शनपूर्वक पुराणादि के संदर्भ प्रदर्शित करते हुए श्लोकों में संकलित विषयों पर विस्तृत चर्चा है। सभी छंदों का स्वरूपपरिचय करा दिया है।

१९ – वैदिक-सम्प्रदायान्तर्गता औपनिषददशशान्तयः
(संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 6+105 मूल्य : 50.00

वेदानुयायियों, विशेषकर शाङ्कर सम्प्रदाय के अध्येताओं में पठन-पाठन के पूर्व व पश्चात् वेदोक्त दश शान्तिमंत्रों का पाठ करने की परम्परा रही है। सर्वसामान्य जन इनके अर्थ से अनभिज्ञ ही रहते हैं। अतः इस ग्रन्थ में 1. शन्नो मित्रः......, 2. सह नाववतु......, 3. यश्छन्दसां......, 4. अहं वृक्षस्य......, 5. पूर्णमदः....., 6. आप्यायन्तु......, 7. वाङ्मे मनसि ......, 8. भद्रं नो......, 9. भद्रं कर्णेभिः......, 10. यो ब्रह्माणं...... इन औपनिषद शान्तिमन्त्रों की अन्वयार्थसहित विस्तृत व्याख्या पूज्यपाद श्री स्वामी जी महाराज ने अध्यवसायियों के हितार्थ प्रस्तुत की है।

20 – JĪVANA YAJÑA (English)
Śrī Svāmī Maheśānanda Giri ji

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 13+155 मूल्य : 30.00

Despite its materialistic tendency, the west all the same, deserves our praise for its inquisitiveness and questioning spirit. It looks towards the East, especially the ancient Indian lore if it is yet worthy applying its elixir to the ever-ailing, care-stricken feverish spirit of our age. And often it is shocked to see an astounding heap of argumentative, self-contradictory pantheistic literature. The tragedy is that often the message of our immortal Vedas is misinterpreted and misunderstood. The inquisitive mind is lost in the cobweb of the numerous layers of metaphysical tenets and principles and in the

absence of proper guidance, is destined to retreat bearing a contemptuous disregard for this life-sustaining scripture. To nip this misunderstanding in the very bud, one has to strike at the very root of the problem. The Hindu system of devotion is in reality a study of symbols. It is through symbols we unlock our hearts and give expression to our sentiments. Without this primary understanding one will not do justice to this book. Śri Svāmī jī Mahārāja has in simple words and lucid style, unravelled very commendably the secrets of life and its mission. The appendix is an unforgettable essence of life's poetry. It is worthy of transporting the reader in divine land of ecstacy where bliss alone reigns. Jivana Yajña revitalises our life giving it a genuine, deathless meaning in its journey to the end.

21 – LECTURES BY (English) ŚRĪ SVĀMĪ MAHEŚĀNANDA GIRI JĪ MAHĀMAṆḌALEŚVARA

i. VEDANTA AND COMMUNAL HARMONY : Rs. 30/-
ii. VEDANTA AND MENTAL CULTURE : Rs. 30/-
iii. VEDANTA AND MODERN SOCIETY : Rs. 30/-
iv. VEDANTA AND INTEGRATION : Rs. 30/-
v. VEDANTA AND ART OF LIVING : Rs. 30/-
vi. VEDANTA AND PURPOSIVE LIFE : Rs. 30/-
vii. VEDANTA AND UNITARY CONSCIOUSNESS : Rs. 30/-
viii. VEDANTA AND PEACE : Rs. 30/-

२२ – व्यक्तित्व का विकास (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 6+134 मूल्य : 30.00

जीवन दुर्लभ घटना है, जिसका प्रत्येक क्षण आनन्द की प्राप्ति के लिये है। आनन्द स्वातन्त्र्य में है। स्वतन्त्रता जीवन का आयाम है, पर बन गया है राजनीति का नारा! जीवन या तो उपार्जन का यन्त्र बन गया है या भारभूत बन गया है। ऐसे समय अपने जीवन के बारे में अनेक प्रश्न खड़े हो जाते हैं। व्यक्तित्व क्या है? विकास का दृष्टिकोण क्या हो? व्यक्ति कितना परतन्त्र है? स्वातन्त्र्य कैसे मिले? हमारे अन्दर कौन-सी शक्ति और सामर्थ्य निहित हैं। उनका उपयोग कर व्यक्तित्व का विकास कैसे करें ?

ऐसे प्रश्नों का उत्तर पूज्यपाद स्वामी जी महाराज इस पुस्तिका में देते हैं। हम घिनौनी स्वच्छन्दता से हट कर निर्मल स्वतन्त्रता कैसे प्राप्त करें एवं अपने जीवन व राष्ट्र-जीवन को कैसे सफल बनावें इसका विमर्श ही सप्त सुमनों से सुरभित इस पुस्तिका का उद्देश्य है।

२३ – गीता प्रवेश (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 12+230 मूल्य : 20.00

श्रीमद्भगवद्गीता का इस दृष्टि से विचार करना इस निबन्धावलि का प्रयोजन है कि किस प्रकार वह एक जीवित व्यवहारदर्शन के रूप में हमारे सामने आये एवं क्या वह आज प्रतिदिन के जीवन में मार्गदर्शन में सक्षम है या नहीं। परिचय, मानस, आचार, समाज, राजनीति, परलोक, अध्यात्म, देवधारणा, जीवन्मुक्ति, यश इन दस विषयों पर शास्त्राधारित, गंभीर एवं सामयिक विश्लेषण उपस्थित किया गया है। गीता के अक्षरार्थ की अपेक्षा गीताकार के दृष्टिकोण से व्यापक विचार प्रस्तुत है जो चिन्तन और व्यवहार के धरातल पर उत्तम प्रेरक बन गया है।

२४ – कठोपनिषद् -१ (प्रथमाध्यायपर्यन्त) (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 5.5"x8.5" पृष्ठ : 24+320 मूल्य : 60.00

कठोपनिषद् की शैली पर ही विश्वरत्न श्रीमद्भगवद्गीता की भित्ति स्थापित है। प्रवक्ता 'यम' व श्रोता 'नचिकेता' के प्रश्नोत्तर रूपी संवादों से दुर्ज्ञेय आत्मतत्त्व को सुगम्य शैली में समझाया गया है। हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में विद्वानोंने इस पर स्वसामर्थ्य से सरल व्याख्याएँ प्रस्तुत की हैं परन्तु साङ्गोपाङ्ग विषय का उत्कृष्ट चिन्तन पूज्यपाद महाराजश्री की लेखनी की विशेषता है।

श्री शाङ्करभाष्य, आनन्दगिरि, गोपालेन्द्रटीका, शंकरानन्द, विद्यारण्य, नारायणादि की दीपिका के प्रदीप से उपनिषद् के गूढ रहस्यों को इस पुस्तक में प्रकाशत किया गया है। पदच्छेद, अन्वय अन्वयार्थ से विभूषित विस्तृत व्याख्या मुमुक्षुओं के लिए परम पाथेय है।

२५ – ज्ञान-साधना (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 98 मूल्य : 40.00

अपनी जानकारी का वैचारिक विश्लेषण करने का सामर्थ्य मानव की सबसे महत्त्वपूर्ण संपत्ति है। ज्ञानों का संश्लेषण ही सारी प्रगति संभव करता है। अध्यात्म-उन्नति के लिये स्वयं जानने वाले को अपनी परीक्षा करनी पड़ेगी कि मैं कौन हूँ? क्यों हूँ? इस परीक्षा का नतीजा ही ज्ञान है। उस तक पहुँचने के निश्चित कदम हैं, ढंग हैं। भगवद्गीता के तेरहवें अध्याय में ज्ञान के समग्र साधन गिनाये हैं। उन्हीं की प्रवचनात्मक व्याख्या यह पुस्तिका है। दस प्रवचनों में बीसों साधनों के स्वरूप का परिचय देकर उनके अभ्यास के व्यावहारिक तरीके स्पष्ट किये गये हैं ताकि साधक लाभ उठा सकें।

२६ – चरम-लक्ष्य (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 87 मूल्य : 40.00

चरम लक्ष्य वही है जिसे पाकर कुछ पाना बाकी नहीं रह जाता, सब प्राप्त हो जाता है। गीता में इसे 'ज्ञेय' कहा, जानने लायक, जिसे जानना स्वाभाविक अभिलाषा का विषय है। वह स्वातंत्र्य, सुख, अभय आदि की पूर्णता की अन्तिम अवधि है। अज्ञात रहा वह बंधकर है, ज्ञेय हुआ साधना कराता है, ज्ञात होने पर मुक्त है। नौ प्रवचनों में विविध पुराण इतिहास के दृष्टान्तों से और गंभीर शास्त्रीय विवेचन से इस ज्ञेय स्वरूप को व्यक्त कर दिया गया है जिससे वेदान्त के अधिकारी अपने गन्तव्य को स्पष्ट समझ लें, अपनी साधना की दिशा के बारे में जागरूक बनें, भ्रम में न पड़ें।

२७ – मानवता की ओर (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 10+235 मूल्य : 40.00

'संघर्ष क्यो?' 'समाज और व्यक्ति' 'सामरस्य का पथ' 'समरसता का प्रभाव' 'दैववाद और संगवाद' 'संगवाद की ओर' 'मानस रोगः भारतीय और पाश्चात्य दृष्टि' 'इच्छा और इच्छाशक्ति' 'आनन्दवाद' इन ग्यारह विषयों पर 'शं नो मित्रः' आदि मंत्र के आधार पर तलस्पर्शी विचार प्रस्तुत है जो आध्यात्मिक क्रान्ति के लिये प्रेरणा का सनातन उत्स है । खण्डन करना सरल है, कठिन तो मण्डन होता है। इस निबंधसंग्रह में सामयिक समस्याओं की आधुनिक राहतमात्र देने वाली प्रक्रियाओं का खोखलापन दिखाकर सनातन निर्मल चिन्तनधारा के पवित्र शीतल जल से उनकी संपूर्ण चिकित्सा का उपाय ही अनुसरणीय है यह सशक्त तर्कों से स्थापित किया है। भारतीयता के पक्षधरों के लिये यह पुस्तक अवश्य पथनिदेशक है।

२८ – मंत्रराजप्रकाश
कैवल्योपनिषद्व्याख्या तथा अष्टादशश्लोकी गीता
(संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 32 मूल्य : 20.00

पंचाक्षर मंत्र मानवमात्र के अधिकारक्षेत्र में आने वाला कल्याणोपाय है। इसके अर्थ का रहस्य श्रीपद्मपादाचार्य ने 23 कारिकाओं में संकेतित किया है। उन्हीं का हिन्दी अनुवाद मंत्रराजप्रकाश है। इस पर गम्भीर चिन्तन कर ग्रंथोक्त अर्थों को हृदयगत कर लेने के बाद अर्थानुसंधान सहित जप अवश्य जीवन्मुक्ति का प्रयोजक बनता है। कैवल्योपनिषद् सरल संक्षिप्त वेदान्त ग्रन्थ है जिसमें साधन-साध्य को पूर्णतः व्यक्त किया गया है। इसे कण्ठ कर अर्थचिन्तन पूर्वक प्रतिदिन पाठ करने से न केवल चित्त निर्मल हो जाता है वरन् उपनिषदों के गहन अभिप्राय समझ में आते जाते हैं। मूल को समझ लिया जाये, चिन्तन साधक अपनी सामर्थ्य से करता रहे, इस उद्देश्य से इस संस्करण में उपनिषद् का सुबोध अनुवाद दिया गया है। तथा संक्षिप्त अर्थ सहित अष्टादश श्लोकी गीता भी संलग्न है।

२९ – वचनामृत (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 4+45 मूल्य : 30.00

पिछली सदी में दशनाम संन्यासी समाज जिन गिने-चुने महापुरुषों को अपना आदर्श मानता है उनमें श्रीध्रुवेश्वर दक्षिणामूर्तिमठ के महामण्डलेश्वर श्री स्वामी नृसिंह गिरि जी महाराज अग्रगण्य हैं इसमें कोई मतभेद नहीं। आज यतियों में श्रेष्ठ विद्वान् साधक प्रायः उन्हीं के कृपापात्र रहे हैं। गृहस्थ समाज में विशेषतः मारवाड़, दिल्ली, पंजाब में भी उनके भक्त ईश्वरप्राप्ति की साधना में संलग्न रहे हैं। उन दिव्य आचार्यचरण की सुमधुर वाणी में कही जीवनोपयोगी शिक्षायें उन्हीं के

शब्दों में एकत्र की हैं। विस्तृत भूमिका ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में संन्यासससंस्था पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालती है।

30 – OUR DHARMA (English)

Śri Svāmī Maheśananda Giri

Size : 20x30/16 Page : 44 मूल्य : 30.00

The pressing need of our age is a comprehensive, clear and appealing exposition of Sanatana Dharma with a direct approach to its very spirit. The present booklet is directed to serve that simple purpose by pointing toward the salient features of our everlasting Dharma. The intention of the publication is to inform, rather than instruct, the modern day sanatani that the cause of his attempt to avoid his Dharma is most probably his ignorance about what our Dharma is.

३१ – ईशावास्योपनिषद् (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 28 मूल्य : 20.00

मंत्रोपनिषदों में सर्वप्रधान ईशावास्य है। इसके प्रथम दो मंत्रों में समूचा वैदिक धर्म व दर्शन गर्भित है। बिना अर्थ जाने पाठ करना गधे द्वारा चंदन ढोनेकी तरह बताया गया है। साक्षरता के प्रसार से अनेक लोग विविध ग्रंथों के पाठ में संलग्न दीखते हैं, उन्हें ग्रंथार्थ जानने की भी कोशिश करनी चाहिए। ईशावास्योपनिषत् का सान्वय हिन्दी अनुवाद व संक्षिप्त तात्पर्यार्थ इसी उद्देश्य से प्रकाशित है कि वेदश्रद्धालु इस वेदसारात्मक ग्रन्थ का अभिप्राय समझें और जीवन सफल करें।

३२ – **बृहदारण्यक सम्बन्धभाष्यवार्तिक** (संस्कृत एवं हिन्दी)

अनुवादक : श्री स्वामी स्वयंप्रकाश गिरि

आकार : 22x36/8 पृष्ठ : 522 मूल्य : 270.00

श्री सुरेश्वराचार्य ने बृहदारण्यक के संबंधभाष्य पर लगभग 1200 श्लोकों में जो ठोस चिन्तन किया है उसकी मिसाल विश्व के किसी व्याख्याग्रंथ की भूमिकासे मिलना दुर्लभ है। विशेषतः पूर्वमीमांसा उसमें भी खासकर प्राभाकरपक्ष का मार्मिक खण्डन करते हुए औपनिषद शांकर दर्शन का यौक्तिक उपस्थापन आचार्य की अद्भुत विशेषता रही जिसका परिचय सम्बंधग्रंथ में स्पष्ट उपलब्ध है। आनन्दगिरि स्वामी ने वार्तिक के प्रत्येक अक्षर का अभिप्राय पूर्ण विस्तार से व्यक्त किया है। उनकी व्याख्या के बिना प्रभाकर-पूर्वपक्ष सर्वथा अबोध्य रहता यह मीमांसाविद्वानों का अनुभव है। हिन्दी में मूल वार्तिक का अनुवाद कर आनन्दगिरि टीका के अनुसार विस्तृत व्याख्या की है जिसमें श्री आनन्दपूर्ण मुनीन्द्र की न्यायकल्पलतिका का भी उपयोग किया है। करीब 300 श्लोकों तक श्रीनृसिंहपुरीकृत एक टीका उपलब्ध हुई है, उसके प्रतिपाद्य विशेषों का भी संग्रह करने का प्रयास रहा है। विषयसूची तथा व्याख्यात मीमांसान्यायों की सूची अध्येताओं के प्रयोगार्थ हैं।

३३ – **विवरणोपन्यासः** (संस्कृत एवं हिन्दी)

श्रीरामानन्दसरस्वतीकृतः

अनुवादक : श्री स्वामी स्वयंप्रकाश गिरि

आकार : 22x36/16 पृष्ठ : 564 मूल्य : 185.00

भाष्यरत्नप्रभा के यशस्वी लेखक श्रीरामानन्द सरस्वती जी की अत्यन्त उपयोगी यह कृति विवरण प्रस्थान में प्रवेश के लिये अनिवार्य द्वार है। अद्वैत सिद्धांत को प्रक्रियाबद्ध दर्शन के रूप में सांगोपांग प्रस्तुत करने वाला संभवतः प्रथम ग्रंथ श्रीप्रकाशात्माचार्य का विवरण ही है। उसे सही समझना तत्त्वदीपन के बिना प्रायः अशक्य है यह देखकर विद्यारण्य स्वामी ने पंचपादिका-विवरण-तत्त्वदीपन का एक संश्लिष्ट

संस्करण तैयार किया विवरणप्रमेयसंग्रह जिसमें अपनी प्रौढ प्रतिभा का आलोक यत्र-तत्र डालकर विषय को और स्पष्टतः समझाया। किन्तु इससे ग्रन्थकलेवर सामान्य छात्र के लिये भयावह हो गया! श्रीरामानंद जी ने कृपापूर्वक यह उपन्यास प्रकट किया है जिसमें विवरण का यथाक्रम सारा विषय आ भी गया है लेकिन इस तरह संक्षिप्त होकर कि कहीं कोई दुरूहता नहीं आयी है। शास्त्ररहस्य की गंभीरतम पैठ होने का ही यह फल है कि सरल भाषा में, सुबोध शैली में सारे तत्त्व स्पष्ट एकत्र किये हैं। 170 कारिकाओं में विषय-संग्रह कर गद्य में हर बिन्दु पर विस्तार किया है। इस ग्रन्थ को विवरण की भूमिका के रूप में भी पठनीय समझना चाहिये और विवरण को उपस्थित रखने के लिये द्रुतपाठ का गुटका भी। शीर्षकों से विषय विभाजन व्यक्त कर दिया है। अनुवाद द्वारा विद्यार्थियों को लाभ होगा।

३४ – **वेदान्ततत्त्वविवेकः** (संस्कृत एवं हिन्दी)

श्रीनृसिंहाश्रमस्वामिविरचित

अनुवादक श्री स्वामी स्वयंप्रकाश गिरि

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 251 मूल्य : 125.00

विवरणभावप्रकाशिका, अद्वैतदीपिका, भेदधिक्कार आदि प्रौढ वेदान्तग्रन्थों के रचयिता श्री नृसिंहाश्रम की 'अद्वैतरत्नकोष' कहलाने वाली मनोरम बोधप्रद कृति है– वेदान्ततत्त्वविवेक । प्रायः वेदान्तप्रकरण चार अध्यायों में विभक्त होते हैं किन्तु इस ग्रंथ में दो ही परिच्छेद हैं: त्वम्पदार्थविवेक-प्रधान प्रथम परिच्छेद जिज्ञासाधिकरण के प्रतिपाद्य का विवेचन है। तत्पदार्थशोधन पूर्वक अभेद पर्यन्त वर्णित करना द्वितीय परिच्छेद का कार्य है जिसमें जन्मादि-समन्वयान्त अधिकरणार्थों पर प्रभूत प्रकाश डाला है। सैकड़ों दार्शनिक पदार्थों की सटीक परिभाषाओं से भरपूर यह ग्रंथ वेदान्तरसिकों और विद्वानों के लिये अवश्य दर्शनीय है। हिन्दी अनुवाद से गैरसंस्कृतज्ञों को भी पूर्ण लाभ मिलेगा।

३५,३६ – सूतसंहिता (दो खण्डों में) (संस्कृत एवं हिन्दी)
माधवाचार्यकृत टीका तथा हिन्दी अनुवाद सहित
अनुवादक : श्री स्वामी स्वयंप्रकाश गिरि

आकार : 23x36/8 पृष्ठ : 1083 मूल्य : 320.00

स्कन्दपुराण की सूतसंहिता धर्म-अध्यात्म के जगत् में एक लब्धप्रतिष्ठ पाठ्य पुस्तक है। कठिन कर्मकाण्ड में असमर्थ साधक भक्तों का अवलम्ब पुराण ही हैं। धर्म में मन-मानी करना अपराध है। शास्त्र स्वयं सरल उपाय बताता है, उन्हें पता लगाना हमारा फर्ज है। पूजा, तीर्थ, व्रत, ध्यान, जप, स्तोत्र, सदाचार आदि धार्मिक जीवन के सभी पक्षों पर व्यावहारिक शास्त्रीय निर्देश सूतसंहिता में उपलब्ध हैं। राजाज्ञा की तरह विधानमात्र न कर संहिता सभी बातों को युक्ति व दृष्टान्तों से हृदयग्राही बनाने में तत्पर है। उपासकों के लिये इसमें असंख्य दिशानिर्देश हैं। ब्रह्मगीता में उपनिषदों पर विशद दार्शनिक चिन्तन उपस्थित किया है जिसका भरपूर प्रभाव वादग्रन्थों तक में लक्षित होता है। सूतगीता योग समझने व करने की सफल कुंजी है। इन दो गीताओं से संहिता का वैशिष्ट्य अतुल्य हो गया है। श्रीमाधवाचार्य की वैदुष्यपूर्ण सविस्तर सुस्पष्ट व्याख्या ग्रंथकी हर ग्रंथि को खोलती है तथा तंत्र व दर्शन सम्बन्धी प्रत्येक रहस्यको मूलनिर्देश पूर्वक प्रकट करती है। आगमशास्त्रमें अनिरुद्ध परिचयवश उन्होंने पुराणस्थ हर संकेत का पूरा खुलासा कर दिया है। समझदार साधकों के लिये यह टीका अनिवार्यतः अध्येतव्य है। टीकार्थ का संग्रह करते हुए मूल का आशय हिन्दी में समझाया गया है। साथ ही अनेक विषयोंका विस्तृत विचार उपस्थित किया है ताकि ग्रंथतात्पर्य समझने में सहायता मिले। टिप्पणी में कुछेक स्पष्टीकरणों के अलावा सभी आवश्यक पाठभेद उपस्थित किये गये हैं जिससे अनुसंधाताओं का उपकार होगा। विस्तृत विषयसूची तथा अकारादिक्रम से श्लोकसूची ने ग्रंथ का उपयोग बढ़ा दिया है। ग्रंथ का बड़ा आकार देखकर दो जिल्दों में बाँधा गया है।

३७ – **शिवभक्तविलासः** (संस्कृत एवं हिन्दी)
अनुवादक: श्रीस्वामी स्वयंप्रकाश गिरि

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 350 मूल्य : 125.00

कावेरी का पावन तट शिवभक्ति के अलौकिक रससे सुसिंचित है। अनंत शिवभक्तों ने उस क्षेत्र की महिमा बढ़ाई है और न केवल स्वयं के वरन् सारे समाज के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। इनमें 63 भक्तों को विशेष आदर मिला है, उन्हें नायन्मार कहते हैं। तमिल का पेरिय पुराणम् उनके जीवन का सर्वांगीण परिचायक है। संस्कृत में संभवतः शिवभक्तविलास ही ऐसा ग्रंथ है। भक्तिरस से ओत प्रोत इस कृति की साहित्यिक छटा भी देखते ही बनती है! वर्णनकौशल और शब्दचयन में लेखक की सिद्धहस्तता चकित करती है। हर चरित की जानकारी शिवभक्ति में अधिकाधिक प्रेरित करती है इसमें कहना ही क्या! हिन्दी में कथासार देकर हिन्दी जगत् को इन विख्यात भक्तों से अवगत कराया है। परिशिष्ट में माणिक्यवाचकर का जीवन दिया है। साथ ही ग्रंथ में उल्लिखित स्थानों का वर्तमान नामादि बताया है ताकि उन स्थलों के दर्शनलाभ से भक्त कृतार्थ हों।

३८ – **आत्मपुराणम् भाग-२** (संस्कृत एवं हिन्दी)
श्री शंकरानन्द सरस्वती; संस्कृत टीका; हिन्दी अनुवाद

आकार : 23x36/8 पृष्ठ : 696 मूल्य : 320.00

द्वितीय भाग में आचार्यपाद ने बृहदारण्यक उपनिषत् के गहनतम गाम्भीर्य को चार अध्यायों में मूलक्रमानुसार सुस्पष्ट व्यक्त कर दिया है। महर्षि याज्ञवल्क्य के व्यक्तित्व का देदीप्यमान चित्रण जैसा इस ग्रंथभाग में है ऐसा संभवतः अन्यत्र साहित्य में दुर्लभ है। गार्गी व मैत्रेयी के प्रसंगों में अनेक चौकाने वाले तथ्य उभर कर आये हैं।

३९ – **आत्मपुराणम् भाग-३** (संस्कृत एवं हिन्दी)
श्री शंकरानन्द सरस्वती; संस्कृत टीका; हिन्दी अनुवाद

आकार : 23x36/8 पृष्ठ : 667 मूल्य : 390.00

श्वेताश्वतर, कठ, तैत्तिरीय-महानारायण एवं गर्भादि ग्यारह उपनिषदों की विशद व्याख्या चार अध्यायात्मक तृतीय भाग में उपलब्ध है। श्वेताश्वतर, महानारायण तथा गर्भादि ग्यारहों पर भगवद्भाष्यकार का व्याख्यान न होने से प्रस्तुत पुराणकार ही संभवतः सबसे प्राचीन साम्प्रदायिक व्याख्याता हैं जिन्होंने इन रहस्यभागों की अतीव विस्तृत मीमांसा कर साधकोंपर असीम अनुग्रह किया है।

४० – **आत्मपुराणम् भाग-४** (संस्कृत एवं हिन्दी)
श्री शंकरानन्द सरस्वती; संस्कृत टीका; हिन्दी अनुवाद

आकार : 23x36/8 पृष्ठ : 420 मूल्य : 280.00

चतुर्थ भाग के प्रारम्भिक तीन अध्याय छान्दोग्योपनिषद् की और चौथा अध्याय केनोपनिषत् की गंभीर व्याख्या करते हैं। भगवती के ध्यानार्थ उनका स्वरूप उमा हैमवती के प्रसंग में विस्तार से समझाया है। सोलहवें सत्रहवें अध्याय क्रमशः मुण्डक व प्रश्न उपनिषदों का सारार्थ व्यक्त करते हैं तथा अन्तिम अध्याय नृसिंहतापनीय की विशद विवेचना में उदार है। समस्त पुराण के प्रधान विषय को ईशोपनिषत् की व्याख्या के व्याज से संक्षेप में प्रकट कर इस ग्रंथरत्न का उपसंहार है।

४१ – **वाक्यवृत्ति** (संस्कृत एवं हिन्दी)
संस्कृत टीकाद्वय; हिन्दी व्याख्या

आकार : 23x36/8 पृष्ठ : 141 मूल्य : 80.00

भगवान् भाष्यकार श्री शंकरभगवत्पाद के करकमलों से लिखित प्रकरण-ग्रंथों में जिनके बारे में कोई लेखकविषयक संदेह नहीं उनमें वाक्यवृत्ति भी सर्वमान्य है। संक्षेप होने पर भी चिरपरिचित प्रसन्न गंभीर शैली वाला यह ग्रंथमणि अद्वैत जिज्ञासु को समस्त ज्ञेय से अनायास

परिचित करा देता है। इस पर आचार्य आनन्द गिरि की संक्षिप्त व्याख्या मूलार्थ सुस्पष्ट कर देती है और विश्वेश्वर पंडित की टीका विषय-मीमांसा में धनी है। हिन्दी अर्थ उक्त दोनों टीकाओं का संग्रह करते हुए सरल ढंग से शास्त्र-अभिप्राय के प्रकाशन का प्रयास है। तीनों व्याख्याओं सहित वाक्यवृत्ति का अध्ययन तत्त्वविचार में अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा।

४२ – **अमृत-पथ** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 368 मूल्य : 140.00

अध्यात्मसाहित्य में रससिंचन वैदिक वाङ्मय का वैशिष्ट्य है। समस्त नाम-रूप-कर्म से विरहित परम सत्य का कितना हृदयग्राही वर्णन संभव है यह बृहदारण्यक उपनिषत् के याज्ञवल्क्यमैत्रेयी संवाद के अध्ययन के बिना समझ सकना असंभव है। किन्तु श्रौतभाषा का निहितार्थ साधारण मति के लिये तिरोहित ही रहता है। आर्ष हृदयों से अनुझंकृत होने वाली हृद्वीणा में ही वह गाम्भीर्य गूंजता है। आचार्यप्रवर श्रीमहेशानन्द गिरि जी महाराज ने प्रवचनों द्वारा उक्त संवाद की गहराई को अत्यन्त सुस्पष्ट कर समस्त आस्तिक जनता पर कृपा की है। प्रवचनों का ही यह मुद्रित रूप अमृत पथ नामसे प्रकाशित है। आचार्यचरण की अनुपम सरल भाषा-शैली में बृहदारण्यक का सार सर्वग्राह्य है।

४३ – **लघुवासुदेवमननम् एवं सिद्धान्तबिन्दुः** (संस्कृत एवं हिन्दी)

हिन्दी व्याख्याता : पं. थानेशचन्द्र उप्रैती (सांख्य-योग-साहित्याचार्य)

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 281 मूल्य : 120.00

श्रीवासुदेवयतीश्वर-रचित यह प्रकरण अत्यन्त सरल प्रक्रिया से अद्वैतसिद्धान्त को करामलकवत् व्यक्त करता है। साधक विवेक कैसे करे इस ढंग का ऐसा कदमवार वर्णन अन्यत्र दुर्लभ है। न्याय-मीमांसा आदि की उलझनों से रहित यह ग्रंथ वेदान्त में प्रवेश चाहने वालों के लिये अनुपम है, विशेषतः आजकल के उन साधकों के लिये जो शास्त्रीय

पद्धतियों से अपरिचित रहते हैं। संस्कृत से भी अनभिज्ञ जिज्ञासु इस पुस्तक से आत्मलाभ कर सकें इस उद्देश्य से आचार्य महामण्डलेश्वर श्री महेशानन्द गिरि जी महाराज के निर्देशानुसार श्री पंडित **थानेश चन्द्र उप्रैती** ने राष्ट्र भाषा हिन्दी में इस सद्ग्रन्थ का व्यवस्थित अनुवाद प्रकट किया है। व्याकरण, साहित्य और दर्शनों के प्रकाण्ड विद्वान् होने पर भी उप्रैती जी ने अनुवाद को बोझिल न बना कर जिज्ञासुओं का अत्यन्त उपकार किया है। विद्यार्थी और सामान्य पाठक इस संस्करण से पूर्ण लाभ उठा सकते हैं। परिशिष्ट में विस्तृत टिप्पणों समेत सानुवाद सिद्धान्तबिन्दु संयोजित है।

४४ – **साधन संग्राम भाग-३** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 512 मूल्य : 110.00

ऋग्वेद का नासदीय सूक्त अद्वैत की विश्वप्रसिद्ध अभिव्यक्ति है। इस सूक्त की रहस्यमयी भाषा से प्रायः सभी अध्यात्मवेत्ता अभिभूत रहे हैं और इसमें छिपे भाव खोजने के यत्न में अनेक विद्वानों ने बहुतेरा साहित्य प्रस्तुत किया है। परमश्रद्धेय आचार्य महामण्डलेश्वर श्री महेशानन्द गिरि जी महाराज ने इस सूक्त की व्याख्या द्वारा इसका अभिप्राय यों व्यक्त किया है कि साधक अपने जीवन में सिद्धान्त को प्रतिपल जी सके। अत एव साधन-संग्राम ग्रंथों के क्रम में इस प्रवचन संग्रह का निवेश है। लघुकाय होने पर भी जगन्मिथ्यात्व का विशदीकरण और साथ ही साथ साधनाक्रम का निर्देश इस ग्रंथ का अपूर्व वैशिष्ट्य है। कथात्मक होने से भाषा अत्यंत सरल है।

४५ – **पुरुषसूक्त** (संस्कृत एवं हिन्दी) प्रथम + द्वितीय

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 710+711-1435 मूल्य : 290.00

शुक्लयजुर्वेद के पुरुषसूक्त की अत्यन्त बृहत् विवेचना श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज ने प्रवचनों के रूप में सन् 1971 ईस्वी में व्यक्त की थी जिसका यह लिपिबद्ध संस्करण पहली बार प्रकाश में आ रहा है। शास्त्रीय मीमांसा से अतिरिक्त समाज-विज्ञान, मनोविज्ञान, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि के सन्दर्भ में वेदान्त का सन्देश खोजकर व्यक्त करना आचार्यचरण का दुर्लभ वैशिष्ट्य आस्तिक समाज में सुविख्यात है। प्राच्य-पाश्चात्य पद्धतियों की निर्मम समीक्षा करते हुए सिद्धान्त की जीवनोपयोगी अभिव्यक्ति आपके प्रवचनों की विशेषता है जो इस ग्रन्थ में प्रतिपृष्ठ दर्शनीय है।

४६,४७ – **शारीरकमीमांसाभाष्यम्** (दो खण्डों में) (संस्कृत)
शांकर भाष्य, प्रकटार्थविवरण, भाष्यभावप्रकाशिका, न्यायनिर्णय, शारीरकन्यायसंग्रह
सम्पादक : श्री मणि द्राविड

आकार : 23x36/8 पृष्ठ : 1325 मूल्य : 790.00

वेदान्तशास्त्र की जटिल समस्याओं पर गहनतम चिन्तन आचार्य बादरायण-प्रणीत ब्रह्मसूत्रों में ही व्यवस्थित रूप से उपलब्ध है जिस पर प्राचीनतम एवं प्रौढतम भाष्य भगवत्पाद आचार्य श्रीशंकर-कृत शारीरकमीमांसाभाष्य ही है। अनेक दिग्गज वेदान्ताचार्यों ने इस भाष्य की विस्तृत व्याख्याएँ उपस्थित की हैं। दार्शनिक-शिरोमणि श्रीअनुभूतिस्वरूप आचार्य का प्रकटार्थविवरण समस्त भाष्य की अद्भुत टीका है जो परवर्ती सभी व्याख्याताओं के लिये आकर बन गयी है। तत्त्वप्रदीपिकाकार श्रीचित्सुख आचार्य की भाष्यभावप्रकाशिका अपने सम्पूर्ण रूप में सर्वप्रथम प्रकाशित की जा रही है। ग्रन्थकार का गौरव ही कृति के महत्त्व का पर्याप्त सूचक है। प्रस्थानत्रयीभाष्यव्याख्याता श्री आनन्द गिरि आचार्य का न्यायनिर्णय तो भाष्य के प्रत्येक शब्द के महत्त्व को हृदयंगम कराने वाला अनिवार्य व्याख्यान सुप्रसिद्ध है। इनसे अतिरिक्त, प्रत्येक अधिकरण के निष्कर्षरूप न्यायों का शास्त्रीय उपस्थापन

श्रीप्रकाशात्मा आचार्य के शारीरकन्यायसंग्रह में प्रकाशत है जिसका उपजीवन अनन्तरवर्ती सभी आचार्यों ने किया है। अद्वैत दर्शन के प्रामाणिक बोधके लिये इन ग्रन्थरत्नों का परिशीलन साम्प्रदायिकों में आवश्यक माना जाता है। उक्त सभी ग्रंथों के, विशेषतः प्रकटार्थके, दुरूह स्थलों पर तथा संदिग्ध पाठों पर तुलनात्मक दृष्टि से विवेचन पण्डित श्री मणि द्राविड ने टिप्पण में प्रस्तुत किया है। अनेक सूचियों से अलंकृत खण्डद्वयात्मक यह संस्करण सभी अध्येताओं के लिये संग्राह्य है।

४८ – **शक्तिपूजा** (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 267 मूल्य : 70.00

स्कन्दपुराण की सूत संहिता में प्रतिपादित 'शक्तिपूजा' के विचार में शक्ति का संवित् स्वरूप, आसक्तिका प्रभाव, राजयोग, परमेश्वर-यश, माता की पूज्यता, बाह्य-आन्तर पूजा, पूजक-भेद, नादोपासना, परा-पश्यन्ती आदि स्तर, साधना में आनन्द आदि गम्भीर विषयों पर विश्लेषणात्मक चिन्तन की प्रवचनात्मक अभिव्यक्ति इस ग्रन्थ का कलेवर है। परिशिष्ट में 'सनातन धर्म का सन्देश' तथा 'सनातन धर्म और मानसिक शान्ति' विषयों पर व्याख्यान उपलब्ध हैं।

४९ – **कठोपनिषद्-द्वितीय अध्याय** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 505 मूल्य : 160.00

कठोपनिषद् के द्वितीय अध्याय में धीरता, निरोध का उपयोग, 'पर' की अवधारणा, पुनर्जन्मवाद, ईश्वरध्यान, अंगुष्ठमात्र पुरुष, 'हंसः शुचिषद्' आदि रहस्यमय मन्त्र, जीव की गति, शाश्वत शान्ति, वृक्ष-रूपक से संसार-वर्णन, ईश्वर से भय, आत्मबोध के उपाय, लय-चिन्तन, योग, अनुशासन आदि गम्भीर विषय व्यक्त हैं जिनका विस्तृत विश्लेषण

भाष्यादि व्याख्याओं के अनुसार एवं आधुनिक यौक्तिक ढंग से आचार्यचरण ने उपस्थित कर मुमुक्षुजनों पर कृपा की है।

५० – **साधना** (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 195 मूल्य : 50.00

छान्दोग्योपनिषत् में नारद जी एक उत्तम साधक के रूप में उपस्थापित किये गये हैं अतः उनकी श्रेष्ठता व्यक्त करने के बहाने आचार्यचरण ने अधिकारिगुणों का अत्यन्त सरल व सरस परिचय प्रवचनों द्वारा दिया था, उन प्रवचनों का संक्षिप्त रूप इस पुस्तक में उपलब्ध है।

५१ – **मानव और समाज** (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 184 मूल्य : 50.00

नर्य, मर्य और दिव्य संस्कृतियों का विश्लेषण कर मानव समाज के सम्बन्धों का सर्वांगीण विवेचन इस ग्रन्थ में प्रकट किया है। समाजशास्त्र, मनोविज्ञान आदि के परिप्रेक्ष्य में प्राचीन शास्त्रों द्वारा प्रशंसित व्यवस्थाओं का उपपादन करते हुए इस पेचीदे विषय को व्याख्यानों के रूप में व्यक्त किया है।

५२ – **श्री शिवसहस्रनामसङ्ग्रहः** (संस्कृत)

सम्पादक : श्री स्वामी मधुसूदनानन्द गिरि

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 386 मूल्य : 85.00

विभिन्न पुराणों में एवं महाभारत में तथा शिवरहस्य में भगवान् शंकर के सहस्रनाम उपलब्ध हैं। परमपूज्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज के निर्देशानुसार इन शिवसहस्रनामों को संकलित कर तथा नामावली भी जोड़कर वेदान्ताचार्य श्री मधुसूदनानन्द गिरि जी ने यह

संग्रह तैयार किया है जिससे सभी शिवभक्त शिवार्चना में प्रामाणिक सहस्रनामों का प्रयोग कर सकते हैं।

५३ – **मानसोल्लासः** (संस्कृत)
टीकाकार : श्रीमद् अनन्तकृष्णशास्त्री
सम्पादक : डा० श्री सच्चिदानन्द मिश्र

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 156 मूल्य : 50.00

भगवान् शंकराचार्यकृत श्रीदक्षिणामूर्तिस्तोत्र (दशश्लोकी) वेदान्ततत्त्वों का एवं साधना का सारगर्भित संग्रह है अतः आचार्य सुरेश्वर का उस पर 'मानसोल्लास' नामक प्रसिद्ध वार्तिक है जिसकी श्रीरामतीर्थकृत व्याख्या सुलभ है। प्रायः पचास वर्ष पूर्व श्रीस्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज के अनुरोध से श्री अनन्तकृष्ण शास्त्री ने वार्तिक पर विस्तृत व्याख्या लिखी जो पहली बार प्रकाशित की जा रही है। कुछ आधुनिक मानसोल्लास को प्रत्यभिज्ञादर्शन का ग्रन्थ बताते हैं, उनका खण्डन कर यह शांकर सम्प्रदायका ही ग्रन्थ है इसे शास्त्री जी ने ऊहापोह से स्थापित किया है। डॉ. सच्चिदानन्द मिश्र (प्राध्यापक बनारस हिन्दू वि.वि.) ने, टिप्पणी व अनुबन्धों समेत टीका का सम्पादित रूप उपस्थित किया है। मानसोल्लास का गम्भीर आशय समझने के इच्छुकों के लिए यह ग्रन्थ अवश्य पठनीय है।

५४ – **श्रीपञ्चाक्षरी विद्या** (संस्कृत एवं हिन्दी)
निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 136 मूल्य : 25.00

शैवसर्वस्व पंचाक्षर मन्त्र की रहस्यात्मकता का विशद विवरण आचार्य पद्मपाद ने तेइस श्लोकों में किया है। व्याकरण आदि शास्त्रों के अवलम्ब से मन्त्र की नौ व्याख्यायें वहाँ प्रकट की हैं। सामान्यमति लोगों के लिए आचार्यवचन भी दुर्बोध हो गये हैं। यह देखकर पंडित श्री हरिनामदत्त ने 'सुबोधिनी' नामक व्याख्या से उसे समलंकृत किया।

आचार्य महामण्डलेश्वर श्री 108 स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज ने 'मन्त्रराजप्रकाश' नाम से पद्मपादीय श्लोकों की हिन्दी व्याख्या प्रकाशित की थी। इस प्रकाशन में मन्त्रराजप्रकाश, सुबोधिनी और सुबोधिनी की विस्तृत हिन्दी व्याख्या संकलित है। प्रस्थानत्रयी-तात्पर्यनिर्णय एवं शारीरकमीमांसा के सब अधिकरणों का सिद्धान्त संग्रह इस व्याख्या की विशेषताएँ हैं। पंचाक्षर मंत्र के गुह्य भावों के जिज्ञासुओं के लिए यह प्रामाणिक संग्राह्य ग्रन्थ है।

५५ – देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र तथा आत्मार्पणस्तुति (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 162 मूल्य : 70.00

सभी देवीभक्त देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र का पाठ करते ही हैं एवं श्री अप्पय दीक्षित द्वारा रचित आत्मार्पणस्तुति शिवभक्तों के लिए अज्ञात नहीं है। आचार्यचरण ने इन दोनों स्तोत्रों पर 1989 में व्याख्यान दिये थे जिनका संक्षेप में संकलन हो पाया जिसे पुस्तकाकार में अब प्रकाशित किया है। स्तोत्रों के अनुवाद के अतिरिक्त प्रत्येक श्लोक के गूढ अभिप्राय को स्पष्टतः प्रतिपादित कर इन दोनों रचनाओं का महत्त्व इस प्रकाशन में स्फुट किया गया है।

५६ – बालव्युत्पत्तिः (संस्कृत)

श्री विश्वनाथ धिताल : (लेखक + सम्पादक)

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 90 मूल्य : **(मुद्रणाधीन)**

न्याय शास्त्र में प्रवेशार्थी जिज्ञासुओं के सुविधा के लिए अनेक लक्षणों का संग्रह समन्वय सहित किया गया है। समन्वय सहित साधर्म्य वैधर्म्य का निरूपण एवं शाब्दबोध पद्धति एवं नियमादि का भी संग्रह किया गया है।

५७ – 'वेदान्तपरिभाषा' (संस्कृत)
सम्पादक : श्री विश्वनाथ धिताल

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 82 मूल्य : 20.00

यद्यपि वेदान्त परिभाषा अनेक टीकाओं के साथ उपलब्ध है तथापि आरम्भिक विद्यार्थियों की सुविधा के लिए एवं कमजोर दृष्टि वाले व्यक्तियों के लिए बड़े अक्षरों में मूलमात्र ग्रन्थ प्रकाशित है।

५८ – श्रीकृष्ण-सन्देश (तीन खण्ड) (हिन्दी)
व्याख्या : निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 1648 मूल्य : 900.00

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य महामण्डलेश्वर जी महाराज ने श्रीमद्भगवद्गीता को सरल सरस व्याख्यानों द्वारा सर्वसाधारण के लिए समझाया है। इस विवरण में शांकरभाष्य का प्रायः सारा भाव एकत्र किया गया है, व्याख्यान्तरों की विशेष बातें सूचित हैं तथा आज के सन्दर्भ में गीता का महत्त्व प्रकट किया है। गीतातात्पर्य भाष्यानुसार ही उचित है इस निश्चय से की यह व्याख्या सन् 2004-5 में महाराजश्री के श्रीमुख से व्यक्त हुई अतः उनकी परिपक्वावस्था की रचना है। इसके अनन्तर पंचदशी की सम्पूर्ण व्याख्या उन्होंने की तथा कुछ उपनिषद्-अध्यायों को समझाया। उनके अनुभव से सिंचित इस टीका के अध्ययन से न केवल जिज्ञासुओं को लाभ होगा, विद्वानों को भी अतिगम्भीर मन्तव्य उपलब्ध होंगे।

५९ – वेदान्तसारः (संस्कृत एवं हिन्दी)
रचयिता : श्रीसदानन्द यति, 'बालबोधिनी'कार : आपदेव
हिन्दी व्याख्याता एवं सम्पादक : डॉ. सच्चिदानन्द मिश्र

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 188 मूल्य : 200.00

सदानन्द योगीन्द्र द्वारा प्रणीत 'वेतान्तसार' अद्वैतसिद्धान्त की मूलभूत अवधारणाओं को बहुत संक्षेप और सुग्राह्य रूप में उपस्थापित

करता है अतः वेदान्तदर्शन की 'लघुसिद्धान्तकौमुदी' के रूप में यह अत्यन्त प्रतिष्ठित एवं प्रचलित है। शास्त्रार्थोपयोगी विवादों को महत्त्व दिये बगैर पूर्ण प्रतिपाद्य का स्पष्टीकरण करने में समर्थ इस ग्रन्थ पर अनेक टीकाएँ उपलब्ध हैं जिनमें मीमांसाशास्त्री आपदेवकृत बालबोधिनी पूर्व में प्रकाशित हो चुकने पर भी सम्भवतः दुर्लभतावश कम प्रचलित रही है। इसमें प्रतिपंक्ति व्याख्या के बजाये उन्हीं बिन्दुओं पर विशेष चिन्तन है जो प्रारम्भिक जिज्ञासु के लिए ज्ञातव्य हैं। मीमांसक होने पर भी यहाँ आपदेव ने न्यायशैली में विवेचन किया है। विविध प्रस्थानों के स्वरूप का बोध इस टीका से सुगम होगा। मूल के दुर्बोध प्रसंगों का विशेष व्याख्यान इसका वैशिष्ट्य है। डॉ. सच्चिदानन्द मिश्र ने विस्तृत स्पष्टीकरणात्मक अनुवाद से मूल एवं टीका का सारा कथ्य तो व्यक्त किया है ही, वेदान्त के गम्भीर चिन्तन के इच्छुकों के लिए सक्षम सम्बल भी उपलब्ध कराया है।

६० – **अद्वैतसिद्धिः** (संस्कृत एवं हिन्दी)
श्रीब्रह्मानन्दसरस्वती-रचित लघुचन्द्रिका सहित
सटिप्पण व्याख्याकार श्रीस्वामिविशुद्धानन्दगिरिजी

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 159 मूल्य : 75.00

आचार्यप्रवर श्रीमत्स्वामिमधुसूदनसरस्वती जी के द्वारा रचित अद्वैतसिद्धि जिस प्रकार से परमतनिराकरण और स्वमतस्थापना के द्वारा सर्वोत्कृष्टता को प्राप्त करती है, ठीक उसी प्रकार से अन्य कोई भी निबन्ध सर्वोत्कृष्टता को प्राप्त नहीं करता है। यह एक मननात्मक ग्रन्थ है। इसके अन्तर्गत चार परिच्छेद हैं। प्रथम परिच्छेद के प्रारम्भ में श्रीब्रह्मानन्दसरस्वती के द्वारा रचित लघुचन्द्रिका नामक टीका के पक्षतावच्छेदक पर्यन्त भाग को आचार्य द्वितीय वर्ष की परीक्षा में रखा गया है। जिज्ञासुओं को सुगमतापूर्वक बोध हो—इसको लक्ष्य करके अद्वैतसिद्धि और लघुचन्द्रिका के मूल का अनुवाद कैलासविद्याप्रकाशिका नामक टीका में किया गया है। लघुचन्द्रिका के सहित मूल को विस्तार से स्पष्ट करने के लिये सत्यानन्दप्रबोधिका टीका दी गई है। अद्वैतसिद्धि

और लघुचन्द्रिका के दुरूह स्थलों को स्पष्ट करने के लिये टिप्पणियाँ दी गई हैं और अन्त में विद्यार्थिओं के लिये प्रश्नोत्तरी भी दी गई है। श्रीस्वामिविशुद्धानन्दगिरिजी के द्वारा रचित कैलासविद्याप्रकाशिका, सत्यानन्दप्रबोधिका, गुरुप्रसादिनी टिप्पणी के माध्यम से उन्होंने अद्वैतसिद्धि का युक्तिपूर्वक सुसंगत निरूपण किया है। अतः विद्वानों के लिये यह ग्रन्थ अवश्य पथनिर्देशक होगा।

६१ – अद्वैतसिद्धिः भाग-१ (संस्कृत एवं हिन्दी)
सानुवाद व्याख्याकार- श्रीस्वामिविशुद्धानन्दगिरिजी

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 317 मूल्य : 150.00

मननात्मक अद्वैतसिद्धि के प्रथम भाग में 'विमतं मिथ्या दृश्यत्वात्' इस प्रयोग के द्वारा प्रपञ्चात्मक द्वैतगत मिथ्यात्व-निरूपण के माध्यम से अद्वैतनिश्चय का प्रतिपादन किया गया है। वाक्यार्थबोध के प्रति वाक्यार्थघटक पदार्थों का ज्ञान कारण होता है– इस न्याय का अनुसरण करते हुए उक्त प्रयोग के घटक पक्ष साध्य हेतु का क्रमशः निरूपण किया गया है। इसके अनन्तर उक्त प्रयोग के हेतुओं में व्यभिचारादि दोष नहीं है– इसका प्रतिपादन किया गया है। जिज्ञासुओं को सहजतापूर्वक बोध हो, इसके लिये मूलानुवाद 'कैलासविद्याप्रकाशिका' में दिया गया है तथा विस्तार से विचार 'सत्यानन्दप्रबोधिका' में दिया गया है। इस प्रकार उक्त दोनों टीकाओं के माध्यम से श्रीस्वामिविशुद्धानन्दगिरिजी ने ग्रन्थाशय को सुगम बना दिया है। विद्यार्थिओं के लिये प्रश्नोत्तरी भी दी गई है।

६२ – अद्वैतसिद्धिः भाग-२ (संस्कृत एवं हिन्दी)
व्याख्याकार - श्रीस्वामिविशुद्धानन्द गिरिजी

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 351 मूल्य : 150.00

मननात्मक अद्वैतसिद्धि के द्वितीय भाग में प्रपञ्चात्मक द्वैतगत मिथ्यात्व को सिद्ध करने के लिये अनेक प्रयोगों को दिखलाया गया है।

उक्त अनुमानों का आगमादि से बाध नहीं होता है—इसका निरूपण दिया गया है। प्रपञ्चगत मिथ्यात्व होने पर भी अर्थक्रियाकारित्वादि की उपपत्ति होती है और प्रतिकर्मव्यवस्था की भी उपपत्ति होती है— इसको स्पष्ट किया गया है। मिथ्यात्वसाधक प्रयोगों में अनुकूल तर्क का प्रदर्शन तथा प्रतिकूल तर्क का निराकरण एवं श्रुत्यादि के समर्थन का भी प्रतिपादन किया गया है। उत्तम जिज्ञासुओं के उपयोगी जो दृष्टिसृष्टिप्रक्रिया है वह श्रुतिसूत्रादिसम्मत है और प्रपंचमिथ्यात्वसिद्धि के अनुकूल है इसको भी इस भाग में दिखलाया गया है। व्याख्याकार श्रीस्वामिविशुद्धानन्दगिरिजी ने ग्रन्थ के भावों को स्पष्ट करने के लिये विस्तृत व्याख्या की है। इससे पाठकों को अवश्य लाभ होगा।

६३ – **अद्वैतसिद्धिः भाग-३** (संस्कृत एवं हिन्दी)
व्याख्याकार - श्रीस्वामिविशुद्धानन्द गिरिजी

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 379 मूल्य : 150.00

अद्वैतसिद्धि के इस भाग में उत्तम जिज्ञासुओं को लक्ष्य करके सर्वप्रथम एकजीववाद का मार्मिक रूप से निरूपण किया गया है। सम्पूर्ण अनर्थों का कारण जो अज्ञान है, उसका लक्षण क्या है? उसकी उपपत्ति कैसे होती है? इसको स्पष्ट करते हुए इस भाग में अद्वैतसिद्धिकार ने स्वपाण्डित्य का प्रदर्शन करते हुए नैयायिकों के प्रागभावादि का भी खण्डन कर दिया है। अविद्या के आश्रय और विषय पर भी विचार किया गया है। अहम्-पदार्थ क्या है? इस पर भी विस्तार से चर्चा की गई है। इसके बाद कुछेक पारिभाषिक एवं प्रक्रियोपयोगी पदार्थों का भी निर्वचन किया गया है। सत्यानन्दप्रबोधिकाकार श्रीस्वामिविशुद्धानन्द गिरिजी ने सभी पदार्थों की व्याख्या विस्तृत रूप से दी है। इससे अधिकारियों को अवश्य लाभ होगा।

६४ – **शिवानन्दलहरी-प्रवचन** (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 244 मूल्य : 100.00

आचार्य श्रीशंकर ने सर्वांगीण अध्यात्मसाधना के प्रतिपादन के क्रम में भक्तिमार्ग के स्पष्टीकरणार्थ अनेक स्तोत्रात्मक प्रबन्ध रचे जिनमें शिवानन्दलहरी समधिक विषयग्राहक एवं उद्बोधक है। आचार्य श्रीस्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज ने अनेक श्लोकों पर विविध प्रसंगों में विचार किया जो तत्तत् प्रवचन-पुस्तकों में उपलब्ध है किन्तु प्रारम्भिक सत्रह श्लोकों पर उनके क्रमबद्ध प्रबंधन इस संस्करण में प्रकाशित हैं जिनमें स्मार्त भक्ति का स्वरूप जीवन्तरूप में प्रकट है। इस परम्परा में परमेश्वर को प्रत्यग्रूप से ग्रहण करना आवश्यक है, यह तथ्य द्वितीयश्लोक के व्याख्यान में स्पष्ट किया है। पढ़ना-मात्र हानिकर कैसे हो सकता है यह भी वहाँ समझाया है। त्रयी (श्लो. 3) पर भी चिन्तन गम्भीर है। वेदश्रद्धा का रूप (पृ. 85) वेदानुसरण है। इसके लिये तर्क उपयोगी (पृ. 93) है। कथा सुनने की विडम्बना व्यक्त (पृ. 120) की गयी है। नर का विचार (पृ. 157) समझने योग्य है। समस्त विचारकों एवं भक्तिभाव से सम्पन्न चिन्तकों के लिये यह पुस्तक अत्युपयोगी है।

६५ – **पञ्चीकरण** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 63 मूल्य : 30.00

वेदान्त-साधकों में प्रसिद्ध पंचीकरण एवं उसके वार्तिक तथा आनन्दगिरीय विवरण का यह सानुवाद संस्करण अद्वैतबोध में प्रवेशार्थियों द्वारा स्वागतयोग्य है। न्यूनतम परिभाषाओं का सहारा लिये अनुभवारूढ प्रक्रिया से अखण्ड वस्तु का साक्षात्कार पाया जा सकता है—यह इस लघु प्रकरण के परिशीलन से व्यक्त होता है। विवरण में विशेषकर विषय का संश्लिष्ट उपस्थापन इस तरह है कि उतने मात्र को हृदयंगम कर चिन्तनलीन साधक आत्मावगति में समर्थ हो सकता है। आंग्ल भूमिका

में वेदान्त का समयोचित विकासोन्मुख दृष्टिकोण प्रतिपादित है जो उसे रूढिवाद से सुरक्षित रखता है।

६६ – **ज्ञानाङ्कुशम्** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16   पृष्ठ : 153   मूल्य : 70.00

'ज्ञानांकुश' मनःशान्ति पाने के अचूक नुस्खों का कोष है। वर्तमान युग में सभी वर्ग अशांतिग्रस्त और पराधीनता के शिकार हैं। अध्यात्मशास्त्र इन दोनों समस्याओं के समाधान के लिये सबल उपाय सुझाता है। मन का विक्षेप दूर करने में हम स्वयं क्या कर सकते हैं यह इस ग्रन्थ का सक्षम सन्देश है। इस पर प्राचीन विवरण था ही जिसके अनुसार आचार्यचरण ने इस प्रकरण पर प्रवचनात्मक व्याख्या का प्रणयन किया। न केवल साधकों वरन् मनश्चिकित्सकों एवं मनोरोगियों को भी इन प्रवचनों से अत्यन्त कारगर प्रकाश प्राप्त होगा जो अशान्ति दूर कर अन्ततः परमार्थ कल्याण में प्रतिष्ठा देगा। सविवरण मूल भी वर्तमान में, इस संस्करण से अतिरिक्त प्रायः दुर्लभ है।

६७ – **अध्यात्मपटल** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16   पृष्ठ : 197   मूल्य : 80.00

मोक्ष-पथ का पथिक जितना मानस-विचलन से प्रतिरोध अनुभव करता है उतना बाह्य से नहीं अतः उसके लिये मनोनियमन अनिवार्य है जो विस्तृत दिशानिर्देश चाहता है। दर्शन का उपस्थापन करते हुए भी आचार्यों ने यद्यपि यह आयाम अछूता नहीं छोड़ा है जैसा कि अध्येताओं से छिपा नहीं है, तथापि ऐसे उपदेशों का संगृहीत रूप सभी के लिये उपादेय है जिससे अपने जीवन में प्रतिदिन आते विक्षेपों का सामना सहजता से किया जा सके। आचार्यचरण ने महर्षि आपस्तम्ब के सूत्रों पर आचार्य श्रीशंकर के नाम से प्रचलित व्याख्यानानुसार प्रवचनों के

माध्यम से उन सभी धर्मों का स्पष्टीकरण सुलभ कराया है, जो किसी भी अध्यात्ममार्गी के लिये पाथेय है। सम्भवतः अध्यात्मपटल का यह एकमात्र हिन्दी उपस्थापन है। मूलसहित मुद्रित होने से आचार्यकृत व्याख्यान का यह अतिसुलभ संस्करण है।

६८ – **चिदानन्दलहरी** (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 569 मूल्य : 150.00

आचार्य श्रीशंकर की प्रौढ मनीषा के विभिन्न प्रतिबिम्बों में अनुपम है 'सौन्दर्यलहरी' जो तन्त्रशास्त्र एवं साहित्य के गुह्य मार्मिक रहस्यों का अगाध आकर है। उसी के 'सुधासिन्धोर्मध्ये' आदि श्लोक पर समस्त सम्भव दृष्टिकोण से चिन्तन जनसामान्य के लिये सुबोध शैली में व्यक्त किया आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज ने व्याख्यानों के माध्यम से। उक्त श्लोक के निमित्त से साधना की अनेक सीढियाँ पार करने के कारगर उपायों का विधान करता यह ग्रन्थरत्न सभी अध्यात्म-जिज्ञासुओं के लिये अनिवार्य अध्ययन का अंश होना निश्चित है।

६९ – **पंचपादिका (मूलमात्रम्)** (संस्कृत)

सम्पादक - स्वामी मधुसूदनानन्द गिरि

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 180 मूल्य : 100.00

वेदान्त साहित्य में मुकुटस्थानीय शारीरकभाष्य है तो उसकी शोभा के वर्द्धक मणि की जगह है पद्मपादाचार्य की टीका पंचपादिका सूत्रभाष्य की यह प्रथम टीका है, आचार्य शंकर के सामने ही तैयार हुई एवं उन्होंने इसे स्वयं सुना देखा यह इतिहास प्रसिद्ध है। यद्यपि आज यह चतुःसूत्रीयपर्यन्त ही उपलब्ध है तथापि वेदान्त मीमांसा के लिये पर्याप्त चिन्तन इसमें संगृहीत है। अनेक विशिष्ट प्रमेय और प्रक्रियाएँ इस टीका के अनुसार ही व्यक्त हो पाने से प्रायः भाष्यव्याख्याता इसी के ढंग को अंगीकार करते हैं यद्यपि प्रस्थानान्तर भी मान्य, प्रामाणिक है।

विवरण और उसकी दो टीकाओं समेत पंचपादिका यद्यपि प्रकाशन ने पूर्व में उपलब्ध करा रखी है तथापि चतुःसूत्रीयभाष्य का पंचपादिकानुसार अनुसन्धान प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से मूलमात्र का यह संस्करण सुलभ कराया जा रहा है।

७० – **दहर विद्या** (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 273 मूल्य : 30.00

छान्दोग्य उपनिषत् के आठवें अध्याय के प्रारम्भ में हृदयकमल के सूक्ष्म विवर में परमेश्वर के ध्यान-चिन्तन-विज्ञान के साधनों को स्पष्ट प्रतिपादित किया गया है। आत्मा के परमार्थ स्वभाव का वह वर्णन ठीक-ठीक हृदयंगम हुए बिना वह साधना सम्भव नहीं । अनेक वर्ष पूर्व आचार्य श्री स्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज ने दिल्ली संन्यास आश्रम में इस विषय पर गम्भीर चिन्तन व्यक्त किया जिसमें आत्मस्वरूप के बारे में विशेष प्रकाश उपलब्ध होता है। प्रवचनात्मक यह ग्रन्थ न केवल दहरोपासकों के लिये वरन् विचारकों के लिये भी पठनीय है।

७१ – **गीता** (संस्कृत)

शांकरभाष्य, अनुभूतिस्वरूपाचार्य, श्रीमद् आनन्दगिरि एवं रामरायकवि विरचित व्याख्याएँ

आकार : 23x36/8 पृष्ठ : 1117 मूल्य : 500.00

प्रस्थानत्रयी सनातन अध्यात्मचिन्तन की आधारशिला है। प्रमेय, प्रमाण एवं साधना (आचार) का सन्तुलन दर्शन का स्वरूप है। श्रीमद्भगवद्गिता सर्वांगपूर्ण दार्शनिक अभिव्यक्ति होने पर भी साधना का समग्र वर्णन है। सभी विचारकों ने गीता की महत्ता स्वीकारी है। वेदान्त सम्प्रदाय में इस ग्रन्थरत्न का महत्त्व अनुपम होने से सभी मतानुयायियों ने इस पर व्याख्यान रचे हैं। भगवान् श्रीशङ्कराचार्य का भाष्य गीता का प्रथम उपलब्ध विश्लेषण है, सभी परवर्ती व्याख्यान आचार्यवचनों पर

निर्भर हैं। भाष्यार्थ के अवगम के लिये अनिवार्य निर्देश आवश्यक होने से गीताभाष्य पर श्री अनुभूतिस्वरूप आचार्य ने सम्भवतः प्रथम व्याख्या रची जो अद्यावधि अमुद्रित रही, इसी संस्करण में पहली बार प्रकाश में आयी है। आचार्य आनन्दगिरि की सुप्रसिद्ध टीका तो इस ग्रन्थ में सुयोजित है ही, प्रायः सवा सौ वर्ष पूर्व भाष्यका बेल्लंकोण्ड रामराय कवीन्द्र कृत विस्तृत विवरण भी मुद्रित है जो अन्यत्र प्रायः दुर्लभ है। श्लोक-पद-उद्धरण आदि सूचियाँ सभी गीताअध्येताओं के लिये पूर्ण उपयोगी हैं।

७२ – **तर्कसंग्रहसर्वस्वम्** (संस्कृत)

सम्पादक - डॉ. विश्वनाथ धिताल

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 124 मूल्य : 70.00

न्यायशास्त्र के प्रारम्भिक ग्रन्थ तर्कसंग्रह के ऊपर कुरुगण्टि श्रीरामशास्त्री के द्वारा विरचित तर्कसंग्रहसर्वस्व नामकी यह टीका अवच्छेदकता आदि नव्यन्याय के पारिभाषिक शब्दावली से भरपूर है जो कि पारिभाषिक शब्दावली के अभ्यास के लिए अत्यन्त उपयोगी है। विशेष जगहों पर टीकाकार के द्वारा की गई टिप्पणी भी अत्यन्त उपयोगी है। साथ में सम्पादक के द्वारा भी तत्तत् स्थान पर विषयस्फोरण के उद्देश्य से टिप्पणी की गई है, जिससे जिज्ञासुओं को सुविधा हो जाती है।

७३ – **नाद ब्रह्म** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 17x27/8 पृष्ठ : 98 मूल्य : 60.00

नाम-रूप से अतीत परतत्त्व की उपलब्धि का उपाय नाम-रूप ही है—यह वैदिक ऋषियों का अनुसन्धान सनातन धर्म-दर्शन-संस्कृति की अन्य सबसे विलक्षण पहचान है। संसार ही इससे परे ले जाने वाला होने से न हेयमात्र है, न उपादेयमात्र। न इससे कोई विरोध है, न इसमें निमग्न होना अभीष्ट है। नाम-रूप उपयोगी है, अतः आत्मलाभ के लिये

इसका उपयोग शिक्षणीय है। रूप की अपेक्षा सूक्ष्म, व्यापक, प्रत्यक् होने से नाम विशेष महत्त्व का है, अतः आगमों में भी इस पर असीम चिन्तन हुआ है जिसके चलते यह साधना अतिजटिल आकार में प्रसिद्ध है। वेद ने प्रणवात्मक नाद की महिमा समझाकर इसका उपयोगी भाग व्यक्त किया जो अथर्वशिखा नामक उपनिषत् में संगृहीत है। इसकी यह प्रवचनरूप संक्षिप्त व्याख्या रहस्योद्बोधन के साथ ही साधकों के मार्गदर्शन के लिये पर्याप्त है।

७४ – **अनुभूतिप्रकाश (तीन खण्ड)** (संस्कृत एवं हिन्दी)

रचयिता - श्री विद्यारण्य स्वामी

व्याख्याता - निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 1867 मूल्य : 1500.00

उपनिषदों के निर्विशेष प्रसंग चुनकर ससन्दर्भ प्रायः प्रतिमन्त्र के पद्यबद्ध व्याख्यानरूप इस निबन्ध में बारह प्रधान उपनिषदों पर बीस अध्यायों में गहन विश्लेषण सर्वसच्छास्त्र-निर्णायक आचार्य श्री विद्यारण्य की सुस्पष्ट शब्दावली में उपस्थित है। इस 'प्रकाश' के आलोक में मन्त्रार्थ देखकर भाष्य का आशय सुग्राह्य हो जाता है। श्रीमहामण्डलेश्वर जी महाराज ने ग्रन्थ का प्रतिश्लोक व्याख्यान उपलब्ध कराया जिसका सारसंग्रह हिन्दीटीका के रूप में प्रकट है। सम्बद्ध श्रुतिवचनों के प्रदर्शन से अतिरिक्त शास्त्रीय समीक्षा तथा विचार का साधना में उपयोग प्रकट करना इस व्याख्या की विशेषता है।

७५ – **स्तुतिसंचयः** (संस्कृत एवं हिन्दी)

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 528 मूल्य : 220.00

सनातन धर्म के सर्वसुकर अनुष्ठेय हैं—व्रत, जप और स्तोत्रपाठ अन्य किसी मत-मतान्तर में परमेश्वर की भक्ति से प्रेरित इतने उत्कृष्ट एवं सारगर्भित स्तोत्र उपलब्ध नहीं हैं। साक्षात् वेद से प्रारम्भ कर अद्यावधि स्तोत्र प्रकाश में आते रहे हैं। श्री दक्षिणामूर्ति मठ, काशी की

परम्परा में देवार्चन और स्तोत्रपाठ का अत्यन्त महत्त्व अक्षुण्ण है। आचार्य महामण्डलेश्वर श्री स्वामी यतीन्द्र कृष्णानन्द गिरिजी महाराज के निर्देश से शिवपूजाविधि सहित अनेक नित्यनैमित्तिक पाठयोग्य स्तोत्रों का संकलन प्रायः पच्चीस वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था जिसे पुनः नये कलेवर में उपस्थित किया गया है। शिवमहिम्नःस्तोत्र रुद्राष्टाध्यायी एवं दुर्गासप्तशती के हिन्दी अनुवाद भी यहाँ सुलभ हैं। विभिन्न देवताओं के स्तोत्र यथाक्रम निविष्टि हैं एवं 22 ग्रहस्तोत्र भी एकत्र किये गये हैं। चार सहस्रनाम इस संकलन में उपलब्ध हैं। सभी श्रद्धालुओं एवं अनुष्ठानकर्ताओं द्वारा यह ग्रन्थ संग्राह्य है।

७६ – **शिवतत्त्वरहस्यम् एवं शिवोत्कर्षमञ्जरी** (संस्कृत एवं हिन्दी)

श्री नीलकण्ठ दीक्षित

सम्पादक - पण्डित शालिग्राम द्विवेदी, ब्रह्मचारी सुन्दर चैतन्य

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 202 मूल्य : 60.00

अद्वैतनिष्ठा-सहित शिवभक्ति का सन्दर्भ स्पष्ट और प्रमाणपुष्ट करने वाले दार्शनिकों में अप्पय दीक्षित के साथ उनके भाई के पौत्र नीलकण्ठ दीक्षित का नाम विद्वत्समाज में सुविदित है। स्कन्दपुराण को शंकरसंहिता के शिवरहस्य में आये शिव के 108 नामों का अभिप्राय पुराण, आगम आदि के प्रकाश में श्रुति-स्मृति के अनुसार प्रकट करता नीलकण्ठ का व्याख्यान 'शिवतत्त्व-रहस्य' नाम से उपलब्ध है। सौ वर्ष पूर्व श्रीरंगम् से प्रकाशित किन्तु चिरकाल से दुर्लभ इस ग्रन्थ को पुनः प्रकट किया गया है। उद्धृत वाक्यों का यथाशक्ति मूल स्रोत दिखाकर सम्पादक ने अनुसन्धान कार्य में संलग्न सबका हित सम्पन्न किया है। 'शिवोत्कर्षमञ्जरी' भी नीलकण्ठ की प्रसिद्ध कृति है, जहाँ विविध पुराणों के अनुसार शिव का उत्कर्ष वर्णित है। सम्पादक ने संक्षेप में प्रत्येक श्लोक का अभिप्राय हिन्दी में व्यक्त कर सभी का उपकार किया है। परिशिष्ट में पौराणिक शिवोत्कर्षस्तोत्र एवं हरदत्ताचार्यकृत

हरिहरतारतम्यस्तोत्र भी सानुवाद एकत्र है। शिवभक्तों और सभी विद्वानों के लिये यह संकलन संग्राह्य है।

७७ – **श्वेतकेतुविद्या** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 292 मूल्य : 120.00

वेदान्त-उपदेश का प्रमुख सन्दर्भ छान्दोग्य उपनिषत् के छठे अध्याय में आरुणि-श्वेतकेतुसंवाद के रूप में समुपलब्ध है। यहाँ 'तत्त्वमसि' यह सुप्रसिद्ध महावाक्य विभिन्न युक्तियों से पुनः पुनः समर्थित किया गया है। वेदान्तप्रकरण प्रायः इस उपदेश के विस्तार में संलग्न हैं। भाष्य-टीकाओं से अतिरिक्त आत्मपुराण, अनुभूतिप्रकाश आदि ग्रन्थों में इसे स्पष्ट समझाया गया है। दार्शनिक प्रतिबन्धों से अनभिज्ञ तत्त्वजिज्ञासु श्रीशांकरभाष्य-अनुसार उपनिषदर्थ समझ सके इस प्रयोजन से आचार्य महामण्डलेश्वर जी ने व्याख्यानों के रूप में इस पर चिन्तन व्यक्त किया है, जो वास्तविकता हृदयंगम कराने में सुतरां सक्षम है।

७८ – **आत्मविज्ञान एवं संक्षिप्त वेदान्तविचार** (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 154 मूल्य : 80.00

अद्वैतविद्या का वैदिक खजाना बृहदारण्यक उपनिषत् है। भाष्य और वार्तिक में इसके रहस्योद्घाटन के लिये भरपूर प्रयास हुआ, जिससे प्रेरित हो अन्य भी आचार्य एतदर्थ प्रवृत्त हुए। इसी का एक प्रसिद्ध मन्त्र भारतीतीर्थ आचार्य के तृप्तिदीपप्रकरण में व्याख्यात है। आचार्य महामण्डलेश्वर जी महाराज ने तदनुसार इस मन्त्रार्थकथन के बहाने साधना के पहलू स्पष्ट किये हैं। ज्ञानयोग्यता-प्राप्ति प्रधान कर्तव्य है, फिर तत्त्वबोध सुकर है। ये व्याख्यान 'आत्मविज्ञान' शीर्षक से प्रकट हैं। एक अन्य प्रवचन शृंखला 'वेदान्तसिद्धान्तनिरुक्तिरेषा' इत्यादि आचार्य श्लोक पर आधारित थी, जिसे 'संक्षिप्त वेदान्तविचार' शीर्षक में रखा है। पाँच

व्याख्यानों में महाराजश्री जी ने शांकरसिद्धान्त का जीवन्त उपस्थापन किया है।

७९ – **मधुकैटभवध एवं दुर्गासप्तशतीसार** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 380 मूल्य : 170.00

सनातनधर्मी श्रीदुर्गासप्तशती के पाठादि का अवश्य अनुष्ठान श्रद्धा-भक्तिपूर्वक करते हैं। शब्दार्थ सुलभ है, पर उतना ही अभिप्रेत हो तो ग्रन्थ का अप्रतिम महत्त्व दुर्बोध है। इसके आध्यात्मिक गाम्भीर्य पर प्राचीन टीकाकारों की अवश्य दृष्टि गयी पर हिन्दी में सुगम व्याख्या अनुपलब्ध रही। आचार्य महामण्डलेश्वर जी महाराज ने विविध अवसरों पर इस पर चिन्तन किया, जिसका संग्रह इस पुस्तक में उपलब्ध है। समूचे ग्रन्थ का संक्षेप में महत्त्व-प्रदर्शन तो किया ही, प्रथम अध्याय का विस्तृत विवेचन भी व्यक्त किया। उत्तरोत्तर अध्यायों का यों व्याख्यान उपलब्ध नहीं हुआ। विनियोगादि तथा देवीसूक्त के आद्यमन्त्र की भी विस्तार से चर्चा संगृहीत है। देवी-उपासक चण्डीपाठ के अभिप्राय को हृदयंगम कर पाठ से पूर्ण लाभ लें एवं साधक प्रेरणा पायें, इसमें यह ग्रन्थ सक्षम है।

८० – **श्रीरामचर्चा** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 139 मूल्य : 88.00

निर्विवाद रूप से भारतीय संस्कृति का प्रधान प्रतिनिधि रामायण है। ऐतिहासिक दृष्टि से वाल्मीकि की कृति ही प्रमाण है, जबकि रामायण के साधकोपयोगी रहस्य विभिन्न आचार्यों एवं सन्तों ने प्रकट किये हैं। व्यासजी ने 'अध्यात्मरामायण' में श्रीरामकथा का आध्यात्मिक व्याख्यान व्यक्त किया। इस ग्रन्थ पर आधारित श्रीमहाराज जी ने नौ प्रवचनों में

रामायणसार उद्घाटित किया है। इस ग्रन्थ से अध्यात्मरामायण का पूर्ण परिचय सुलभ है।

८१ – **श्रीशिव-आरती** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 67 मूल्य : 68.00

'ॐ जय गंगाधर हर' इत्यादि आरती संन्यासी समाज में प्रतिदिन गायी जाती है। इसके अभिप्राय को महाराजश्री ने विस्तार से समझाया, जिसका सार प्रस्तुत पुस्तक में संगृहीत है। इसे हृदयंगम कर लेनेपर आरती गाते हुए तदनुरूप भावना का प्रवाह सम्भव होगा। शब्दार्थ एवं भावार्थ के जिज्ञासुओं के लिये यह संस्करण अत्यन्त उपयोगी है।

८२ – **पञ्चदशी** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 1520(चार खण्डों में) मूल्य : 1100.00

आचार्य-परम्परा में अतिशय महत्त्वपूर्ण स्थानप्राप्त श्रीविद्यारण्य स्वामी की अद्भुत सर्वांगपूर्ण प्रसिद्ध रचना 'पंचदशी' वेदान्तबोध के लिये अनिवार्य और पर्याप्त अध्येय प्रकरण है। संस्कृत में इस पर दो-तीन टीकायें उपलब्ध हैं तथा अन्य भाषाओं में अनेक व्याख्यायें मिलती हैं, तथापि ग्रंथ की गरिमा के अनुरूप प्रसन्न गम्भीर एवं सीधे ही हृदय को भीतर तक छूने वाला प्रामाणिक विशद व्याख्यान सम्भवतः प्रथम बार प्रकट हुआ है। श्री 108 स्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज ने ईस्वी सन् 2004 से 2006 तक इस पर जो चिन्तन व्यक्त किये उनका लिपिबद्धरूप यह व्याख्यान मानो ग्रंथकार से तादात्म्य स्थापित कर साधिकार ग्रंथार्थ सोपपत्ति हृदयगत कराते हुए साधक को दिशा-निर्देश देता है कि तत्त्व को जीवन में कैसे अनुभव करे। ग्रंथमात्र के अर्थ में न सीमित रह वेदान्त का रहस्य यहाँ प्रतिपृष्ठ अनावृत मिलता है।

८३ – **श्री देव्यथर्वशीर्ष** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 84 मूल्य : 70.00

वैदिक ऋषि नाम-रूप-कर्म से अतीत को इन्हीं की परिधि में ऐसे उपस्थित करते हैं कि अध्येता को सविशेष-निर्विशेष दोनों स्तर निर्विवाद प्रतीत होते हैं। व्यासजी ने इस रीति का सर्वाधिक प्रभावी प्रयोग किया है। भगवान् भाष्यकार आचार्य श्री शंकर के सम्प्रदाय में पंचदेव-उपासना प्रतिष्ठित है तथा प्राचीन साहित्य में पाँचों देवों के अथर्वशीर्ष सुलभ हैं। इनमें अतिप्रचलित गणेश और देवी के अथर्वशीर्ष हैं। श्री स्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज ने ईस्वी सन् 2006 में व्याख्यानों द्वारा देव्यथर्वशीर्ष का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट किया था। शास्त्र सूत्रशैली में अतिगम्भीर भाव सूचित कर देते हैं जिनका मर्म तत्त्वज्ञ महात्मा ही उद्घाटित करते हैं। यह तथ्य इन व्याख्यानों में व्यक्त है। परिशेष में उपनिषद्ब्रह्मयोगी-कृत विवरण और संहिता में उपलब्ध मंत्रों पर सायणभाष्य भी एकत्र कर उपस्थित किया गया है।

८४ – **संसरण एवं उससे सुरक्षा** (संस्कृत एवं हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 204 मूल्य : 100.00

जीवन और इसकी समाप्ति अनिवार्य वास्तविकता हैं तथा इनकी उपपत्ति इनके पौनः पुन्य से ही है यह वैदिक मनीषा है। असंख्य जीवनों का नैरन्तर्य ही संसरण है जो विवेकी के उद्वेग का निमित्त बनकर उसमें इससे बचाव की इच्छा उत्पन्न कर देता है। संसरण का भी प्रामाणिक तथा उपयोगी रूप शास्त्र से ही पता चलता है तथा इससे सुरक्षा भी वहीं से समझी जा सकती है। बृहदारण्यकोपनिषत् के शारीरक ब्राह्मण में यह प्रसंग निर्दिष्ट है जिसका सर्वोपयोगी प्रवचनात्मक व्याख्यान आचार्यश्री जी द्वारा इस ग्रन्थ में उपलब्ध कराया गया है। परलोक गमन

के बारे में सहज जिज्ञासाएँ यहाँ दूर की गयी हैं एवं जन्ममृत्यु के चक्र से बच निकलने का व्यावहारिक तरीका स्पष्ट किया गया है।

८५ – **रुद्राष्टाध्यायी** (संस्कृत)
विविध संस्कृत भाष्य

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 220 मूल्य : 100.00

सनातन धर्म में शिवपूजा सर्वाधिक अभ्यस्त नित्यनैमित्तिक-काम्य कर्म है। शिवपूजा में प्रधान है रुद्राभिषेक जिसमें विनियुक्त शुक्ल यजुर्वेद के मन्त्रों का संकलन 'रुद्राष्टाध्यायी' नाम से प्रसिद्ध है। उत्तर भारत में माध्यन्दिन संहिता प्रचलित है अतः तद्गत मन्त्रों का रुद्राष्टाध्यायी या रुद्रिय में संग्रह है। माध्यन्दिनमन्त्रों का सायणभाष्य सुलभ नहीं। शुक्ल ही यजुर्वेद की काण्वशाखा की भी रुद्रिय उपलब्ध है जिसमें मन्त्रशः माध्यंदिन से स्वल्प ही अन्तर है। काण्वसंहिता पर सायणभाष्य सुलभ है अतः इन मंत्रों का सायणोक्त अर्थ उपस्थित हो इस संकल्प से यह संस्करण प्रेरित है। फिर भी अनेक मंत्रों पर सायण आचार्य की व्याख्या न देख आनन्दबोधाचार्य और अनन्ताचार्य की प्राचीन टीकायें उपलब्ध करायी हैं। आशा है संस्कृतज्ञ रुद्रपाठी इन व्याख्याओं से मंत्राशय समझकर पाठ करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकेंगे।

८६ – **बोधसार** (संस्कृत एवं हिन्दी)
आचार्य नरहरि

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 874 मूल्य : 450.00

अठारहवीं सदी (ईस्वी) में विरचित 'बोधसार' नामक प्रकरण काव्यमयी कुतूहलपूर्ण रीति से अद्वैत दर्शन की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति करता है। इसके रचयिता श्रीनरहरि एवं इसके व्याख्याकार श्रीदिवाकर का ऐतिह्य अप्रसिद्ध होने पर भी उनकी रचना साधक-समाज में अतीव प्रतिष्ठित है। श्लोक सरल प्रतीत होने पर भी गम्भीर रहस्यमयी ध्वनियों से पूर्ण हैं जो तथ्य व्याख्याकार ने उद्घाटित किया है। ग्रंथ के संस्कृत

एवं हिंदी व्याख्यान अनेक दशाब्दियों से दुर्लभ देख इन्हें नवीन आकार में सम्पादित कराया है ताकि विद्वान् एवं साधक इस सरस प्रबन्ध का आस्वादन कर तत्त्वनिष्ठा के लिये प्रेरित हों।

८७ – **शिवसंकल्पसूक्त** (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/8 पृष्ठ : 552 मूल्य : 275.00

ऋग्वेद संहिता के खिल में छब्बीस मन्त्रों का शिवसंकल्पसूक्त है, जिसके छह प्रधान मंत्र यजुर्वेद में भी उपलब्ध हैं जो रुद्राष्टाध्यायी के प्रथम अध्याय में संगृहीत हैं। ईस्वी सन् 1969 के चातुर्मास्य में श्रीमहाराजजी ने विश्वनाथ संन्यास आश्रम दिल्ली में इस सूक्त का अवलम्बन ले अपनी प्रसिद्ध सुबोध गम्भीर शैली में विस्तार से अध्यात्म साधना के रहस्य व्यक्त किये थे, जिन्हें तभी लिपिबद्ध तो किया गया पर प्रकाशित नहीं किया जा सका। ग्रंथप्रकटन के क्रम में अब वे प्रवचन उपस्थित हैं। इनमें वेदान्त की जीवन्त अभिव्यक्ति मिली है तथा साधक को शास्त्रानुशीलन की दिव्य दिशा प्रदर्शित है जिससे वेद प्रतिक्षण के लिये प्रेरक एवं उद्बोधक बन जाता है। आशा है सुधी पाठक इसके अध्ययन से सूक्त का अभिप्राय हृदयंगत कर कल्याण के भागी बनेंगे।

८८ – **परमात्मप्राप्ति के सोपान** (हिन्दी)

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 420 मूल्य : 200.00

सामवेद के ब्राह्मणभाग के 'महन्मे वोचः' आदि खण्ड का प्रवचनात्मक व्याख्यान ईस्वी सन् 1968 में सम्पन्न होने पर भी ग्रन्थाकार में अब प्रकट किया गया है। यज्ञसम्पादन के संकल्प का आध्यात्मिक महत्त्व बताते हुए यह शृंखला प्रारंभ हुई है। आध्यात्मिक आचारसंहिता का परिचय देते हुए परमात्मा की स्थिरता बतायी और सोमयाग से उसकी आराधना का ढंग कहा। अंत में समझाया कि जीवन्मुक्त का

शरीर ही वेदि बन जाता है जहाँ यज्ञ ही होता है। इस स्थिति को पाने से ही 'जीव' इस संसार का 'मुकुट' है। इस उत्कर्ष के लाभ के प्रायः सब साधन सोपानरूप से प्रतिपादित होने से मुमुक्षुओं के लिये यह ग्रंथ अनिवार्य मार्गदर्शक है। वैदिक वाङ्मय के आध्यात्मिक गाम्भीर्य के उद्घाटन में रुचि रखने वाले विद्वानों को भी इसके अनुशीलन से विलक्षण प्रेरणा मिलेगी।

८९ – हिन्दी बोधसार

आकार : 23x36/16 पृष्ठ : 11+433 मूल्य : 150.00

अद्वैत सिद्धान्त की हृदयस्पर्शी मार्मिक काव्यगुण-सम्पन्न अभिव्यक्ति 'बोधसार' के रूप में एक प्रसिद्ध कृति है जो अनेक वर्षों पूर्व संस्कृत एवं हिंदी व्याख्याओं सहित उपलब्ध रहकर भी दशाब्दियों से दुर्लभ हो गयी थी। **श्रीनरहरि** की इस रचना को संस्कृत-हिन्दी व्याख्या सहित प्रकाशित कर जो मात्र हिंदीसे परिचित हैं उन्हें संस्कृत ग्रन्थ का भार न ढोना पड़े इस लिये मूलश्लोकों सहित हिन्दी व्याख्या पृथक् प्रकट कर दी है। आशा है इस प्रयास से ग्रन्थ के प्रचार-प्रसार में सहायता होगी।

९० – पञ्चप्रक्रिया

सर्वज्ञात्म महामुनि, आनन्दज्ञान, पूर्णविद्यमुनि

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 82 मूल्य : 100.00

अद्वैतपरम्परा के अतिशय श्रद्धेय आचार्यों में **सर्वज्ञात्म-महामुनि** प्रसिद्ध हैं। संक्षेपशारीरक के रचयिता इन आचार्य ने वेदान्त- चिन्तन की प्रक्रिया साधकों को स्पष्ट होवे इस पुनीत उद्देश्य से '**पञ्चप्रक्रिया**' नामक लघुकाय प्रकरण रचा है जिसका गाम्भीर्य **आनन्द गिरिस्वामी** तथा **पूर्णविद्य मुनि** ने व्याख्याओं द्वारा प्रकट किया है। पाँच प्रकरणों में शब्दवृत्तियाँ, महावाक्य, पदार्थद्वय, अवान्तरवाक्य तथा बन्ध-मोक्ष इन शीर्षकों के अन्तर्गत संश्लिष्ट सुस्पष्ट विचार उपलब्ध हैं। केवल हिंदीवेता वेदान्तजिज्ञासुओं के लाभार्थ मूल ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद भी इस

संस्करण में जोड़ा है। दो संस्कृत टीकाओं सहित पंचप्रक्रिया का सानुवाद यह एकमात्र संस्करण अवश्य संग्राह्य है।

९१ – आत्मबोध

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 22x36/16 पृष्ठ : 144 मूल्य : 50.00

आचार्य श्रीशंकर के निर्विवाद प्रकरणों में **आत्मबोध** प्रसिद्ध है जिसपर आचार्य श्री पद्मपाद द्वारा रचित टीका भी उपलब्ध है। आत्मा के याथार्थ स्वरूप के अनावरण के लिये आवश्यक चिंतन यहाँ एकत्र है। आचार्य महामण्डलेश्वर श्री स्वामी महेशानन्द गिरिजी महाराज के व्याख्यानों पर आधारित आत्मबोध का यह संस्करण सरल रीतिसे वेदान्त-विचार करने वाले साधक जिज्ञासुओं के लिये रुचिकर है।

९२ – शाण्डिल्यविद्या

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 298 मूल्य : 100.00

औपनिषद साहित्य में छान्दोग्य का स्थान सर्वोपरि है जिसमें विश्वप्रसिद्ध 'तत्त्वमसि' उपदेश प्राप्त है। उसी ग्रंथरत्नमें मोक्षप्रद उपासनाएँ भी विहित हैं जिनमें 'शाण्डिल्य विद्या' की अपार कीर्ति है। सर्वत्र परमात्मदृष्टि का अभ्यास इस विद्या का सारभाग है जो आचार और भावनाओं का शोधक होने से आत्मसाक्षात्कार की योग्यता दिलाने में सक्षम है। महाराजश्री ने ई. १९९८ में इस विद्या पर प्रवचन दिये थे जिनका लिखित रूप इस संस्करण में उपलब्ध कराया गया है।

९३ – श्रीमद्भागवत महापुराणम् - १
हिन्दी अनुवाद एवम् श्रीधरी टीका

आकार : 23x36/8 पृष्ठ : 528 मूल्य : 500.00

वैयासिक साहित्य में सर्वोत्तम स्थान प्राप्त करने वाले पुराणों में

श्रीमद्भागवत का महत्त्व अतिशय है। विद्वान् से जनसामान्य तक सभी के लिये आकर्षक और भक्तिभाववर्द्धक यह ग्रन्थ अद्यावधि लोकमानसमें आदरणीय है। ‘**भावार्थदीपिका**’ श्रीधराचार्य द्वारा कृत भागवत-टीका ग्रन्थहृदय के उद्घाटन के लिये निर्विवाद सर्वमान्य है। इसके प्रकाश में मूल श्लोकों पर चिन्तन करने से कल्याण स्वतः सिद्ध है। श्लोकों का शब्दार्थ भी सुबोध हो जाये इस दृष्टि से इस संस्करण में श्रीधरी से अतिरिक्त श्लोकानुवाद भी स्थापित है। **प्रथम** से **तृतीय** स्कन्ध पर्यन्त ग्रन्थ इस खण्ड में प्रकट किया गया है।

९४ – श्रीशिवमहिम्नःस्तोत्रम् की प्रवचनात्मक व्याख्या

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 22x36/16 पृष्ठ : 240 मूल्य : 160.00

श्री पुष्पदन्त आचार्य की स्वाभाविक भक्तिमय अभिव्यक्ति ‘**श्री शिवमहिम्नः स्तोत्र**’ आस्तिक समाज में अत्यन्त आदरणीय है। स्तोत्र साहित्य में ही नहीं, साहित्यमात्र में इसका सम्मान अद्वितीय है। सविशेष-निर्विशेष दोनों ईश्वररूप रुचिर रीति से प्रकट हैं तथा यथाशक्ति इनके प्रति समर्पण की प्रेरणा सुलभ है। इस पर संस्कृत-टीकाएँ अनेक हैं एवं शब्दानुवाद भी सरलता से मिलते हैं किन्तु अध्यात्म साधना में प्रगति के लिये इसमें निहित निर्देशों का उद्घाटन सुबोध शैली में महाराजश्री के व्याख्यानों जैसा अन्यत्र देखा नहीं जाता । पदच्छेद, अन्वय, अन्वयार्थ, टिप्पण एवं व्याख्यान तथा मूलपाठ, सभी से सम्पन्न यह संस्करण अवश्य ग्राह्य है।

९५ – पराविद्या

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 5.5"x7" पृष्ठ : 106 मूल्य : 25.00

मुण्डक उपनिषत् दो विद्याओं का उल्लेख करती है, परा और अपरा । मोक्ष का साक्षात् साधन बनने वाली है परा विद्या तथा उसकी

तैयारी कराने वाली अपरा है। मोक्ष से असम्बद्ध या संसरण को बढावा देने वाली जानकारियाँ तथा तकनीकें विद्या कहलाने लायक ही नहीं हैं। नौ प्रवचनों में (ई. १९८८ में) महाराजश्री जी ने इस प्रसंग पर चिंतन व्यक्त किया था जिसका संकलन पुस्तकाकार में उपलब्ध कराया गया है। संक्षेपमें मोक्ष-मार्ग के परिचय के लिये यह स्वल्पकाय ग्रंथ अवश्य पठनीय है।

९६ – अद्वैतसिद्धिः भाग ४ एवं ५

स्वामी विशुद्धानन्द गिरि

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 404(भाग-४) मूल्य : 200.00

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 254(भाग-५) मूल्य : 125.00

अद्वैतसिद्धि के द्वितीय परिच्छेद के **अखण्डार्थविचार** से **जीवों** के अन्योन्य **भेद में अनुमानविचार** पर्यन्त विषय, चौथे भाग में एवं तदनन्तर आत्मभेदमें अनुकूल तर्क से समाप्ति पर्यन्त विषय पाँचवें भाग में हिन्दी व्याख्या सहित रखे गये हैं। इस प्रकार इन दो भागों के साथ 'सत्यानन्दप्रबोधिका' नामक अभिनव हिन्दी व्याख्या युक्त अद्वैतसिद्धि का प्रकाशन पूर्ण हो गया है। छात्र एवं विविदिषु इस व्याख्या द्वारा मूल ग्रन्थ हृदयंगम करेंगे ऐसी आशा है ।

९७ – स्वानुभवादर्श

माधव आश्रम

आकार : 22x36/16 पृष्ठ : 112 मूल्य : 90.00

अठारहवीं सदी ईस्वी के सम्मानित वेदान्ताचार्यों में श्री **माधव आश्रम** का नाम विदित है। इनकी एकमात्र रचना '**स्वानुभवादर्श**' प्रसिद्ध है लेकिन वही इनके वैदुष्य तथा गाम्भीर्य को व्यक्त करने केलिये पर्याप्त है। सटीक मूल ग्रंथ ई. १९१७ में प्रकाशित था, संभवतः अब दुर्लभ है, हिन्दी में यह एकमात्र अनुवाद उपलब्ध कराया गया है। अद्वैत-विचार के अनेक आवश्यक बिन्दुओं पर सुबोध चिन्तन से भरा यह प्रकरण सभी दर्शनरसिकों केलिये अवलोकनीय है।

९८ – सदाचार

आकार : 20x30/16 पृष्ठ : 21 मूल्य : 10.00

सनातन परम्परा प्रातरुत्थान से रात्रीशयन पर्यन्त समस्त व्यवहारों का शास्त्रानुसारी प्रकार स्वीकारती है जो इह-पर उभय लोकों में हितकर है। शास्त्रविधि का उल्लंघन हानिकर ही है। परम धर्म और परम तप सद्-आचार है जिससे पाप क्षीण होते हैं, सामाजिक व्यवहार सामंजस्यपूर्ण रहता है। अत्यन्त संक्षेपमें अत्यावश्यक नियमों का परिचय देकर इस पुस्तिका में जनसामान्य को स्पष्ट मार्गदर्शन दिया गया है। नित्य कर्म तथा दैनिक देवपूजा में विनियुक्त सर्वोपयोगी मंत्र अर्थसहित एकत्र किये गये हैं। प्रचलित अधिकतर देवताओं के ध्यानश्लोक भी अर्थसहित मुद्रित हैं। प्रत्येक सनातनी को इस पुस्तिका से लाभान्वित होना चाहिये।

९९ – सद्वचन

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 22x36/16 पृष्ठ : 208 मूल्य : 50.00

महाराजश्री के विस्तृत साहित्यसे चुने कुछ वाक्य, अनुच्छेद विषयवार व्यवस्थित किये गये हैं। बंधन, अन्न, आचार, धर्म, गुरु, शोधन आदि अनेक शीर्षकों के अन्तर्गत महाराजश्री के विचार ससन्दर्भ प्रकट हैं ताकि रुचि रखने वाले अध्येता लाभान्वित हों।

१०० – बोधक दृष्टान्त

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 22x36/16 पृष्ठ : 423 मूल्य : 50.00

महाराजश्री के प्रवचन-ग्रन्थों में अनेक कथा, दृष्टान्त, उदाहरण मिलते हैं जो संक्षेप में स्मरणीय तरीके से कोई गंभीर रहस्य प्रकट करते हैं। विस्तृत ग्रंथ पढ़ने में अक्षम पाठकों के हितार्थ अनेक ग्रन्थों से चयनित कुछ प्रसंग स्थलनिर्देश सहित एकत्र किये हैं ताकि विभिन्न विषयों पर कुछ अनुकरणीय विचार सुलभ हो जायें।

१०१ – साधन-नवनीत

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 6.1"x9.45" पृष्ठ : 194 मूल्य : शीघ्र

'सर्ववेदान्तसिद्धान्तसारसंग्रह' आचार्य शंकररचित प्रसिद्ध प्रकरण है जहाँ साधनों का विशेष स्पष्टीकरण है। महाराज श्री ने कथा-शैली में इस ग्रंथ को कई बार समझाया किंतु एक ही बार कुछ काल के प्रवचन संगृहीत हुए जिनमें साधनों का वर्णन है। उन्हीं व्याख्यानों को यहाँ संकलित किया है जहाँ श्लोक-६७ से श्लोक-१३६ तक का ग्रन्थ स्पष्ट किया गया है।

१०२ – पुरुषोत्तमयोग

निरञ्जनपीठाधीश्वर श्री १०८ स्वामी महेशानन्द गिरि जी महाराज

आकार : 5.5"x8.25" पृष्ठ : 197 मूल्य : शीघ्र

श्रीमद्भगवद्गीता मानव अध्यात्म का अद्भुत ग्रन्थ है जो धरती की सभी संस्कृतियों में आदर पाये है। भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुनको निमित्त बनाकर समस्त मनुष्यों को कल्याण का निश्चित मार्ग सुलभ कराया है। इस ग्रन्थ के पन्द्रहवें अध्याय को स्वयम् भगवान् ने 'शास्त्र' कहा है। इस पर महाराजश्री की प्रवचनात्मक व्याख्या ग्रन्थाकार में उपलब्ध कराई है ताकि जिज्ञासु साधक उपकृत हो सकें।

१०३ – उपनिषद्भाष्यम् - प्रथम (संस्कृत)

ईशादि अष्टोपनिषदों का भगवत्पाद शंकराचार्यकृत भाष्य

संस्कृत टीकाकार : सुरेश्वराचार्य, आनन्दगिरि, गोपालयतीन्द्र, अच्युतकृष्णानन्द आदि

सम्पादक एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री

आकार : 23x36/8 पृष्ठ : 34+746 मूल्य : 500.00

वैदिक वाङ्मय का ज्ञानकाण्डात्मक अंश उपनिषदों के रूप में

प्रसिद्ध है। अद्वैतनिष्ठा को वेदों के तात्पर्य के रूप में ग्रहण करते हुए भगवत्पाद आचार्य ने दश उपनिषदों पर विस्तृत भाष्य लिखकर वैचारिक ऊहापोह की जो प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी, उससे अवैदिक मतों का युक्तिबद्ध खण्डन कर दिया। ईशादि अष्टोपनिषदों का भाष्य एवं उपलब्ध सभी टीकाओं का संकलन इस खण्ड में प्रस्तुत किया गया है। तैत्तिरीयवार्तिक भी आनंदगिरि टीका समेत इस संकलन में शोभित है। माण्डूक्यकारिका भाष्य पर **अनुभूतिस्वरूपाचार्यकृत** टीका सर्वप्रथम प्रकाशित हुई है। **द्वितीय संस्करण में** इस टीका का अन्य मातृकाओं के अनुसार पाठ-शोधन पण्डित मणि द्राविड ने किया है।

१०४ – उपनिषद्भाष्यम् - २ (छान्दोग्य) (संस्कृत)

भगवत्पाद शंकराचार्यकृत छान्दोग्यभाष्य

संस्कृत टीकाकार : आनन्द गिरि, नरेन्द्रपुरी एवं अभिनवनारायणेन्द्र

सम्पादकः एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री (द्वितीय संस्करण श्री मणि द्राविड)

आकार : 23x36/8 पृष्ठ : 540 मूल्य : 350.00

भगवत्पाद शंकराचार्य द्वारा छान्दोग्य उपनिषद् पर किये गये भाष्य के साथ तीन प्रमुख टीकाएँ इस खण्ड में संकलित हैं। सम्पादक ने विस्तृत टिप्पणियों में मतान्तरीय व्याख्याओं की विद्वत्तापूर्ण आलोचना उपस्थित की है जिसमें तुलनात्मक अध्ययन के लिए यह संस्करण अनिवार्य हो गया है। द्वितीय संस्करण में उपनिषच्छब्दकोश एवं उद्धरणसूची जोड़कर ग्रन्थ को सर्वांगपूर्ण बनाया गया है।

१०५ – उपनिषद्भाष्यम् - ३ (बृहदारण्यक) (संस्कृत)

भाष्यकार : भगवत्पाद श्री शंकराचार्य; संस्कृत टीका : आनन्द गिरि एवं विद्यारण्य

संपादक : एस. सुब्रह्मण्य शास्त्री

आकार : 23x36/8 पृष्ठ : 89+733 मूल्य : 500.00

शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण के अन्त में आने वाली यह उपनिषद् सबसे बड़ी उपनिषद् है । आचार्य का भाष्य काण्वशाखीय पाठ के आधार पर है तो विद्यारण्यकृत दीपिका माध्यंदिनशाखीय पाठानुसारिणी है। आनन्दगिरि ने भाष्य पर टीका लिखते समय सुरेश्वरकृत वार्तिक के दृष्टिकोण को महत्त्व दिया है।

विस्तृत कण्डिका-सूची और शब्दवाक्यकोष का परिशिष्टमें अन्तर्भाव किया गया है। आचार्य महामण्डलेश्वर श्री स्वामी महेशानन्द गिरि जी द्वारा विस्तृत अंग्रेजी भूमिका विषयवस्तु को स्पष्ट करने में सहायक होगी।

१०६ – Introductions to Vedanta

Śrī 108 Svāmī Maheśānanda Giri Jī

आकार : 20x30/8 पृष्ठ : 379 मूल्य : 50.00

श्रीदक्षिणामूर्ति मठ द्वारा प्रकाशित उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र, वार्तिक, प्रकरण और पञ्चपादिका ग्रन्थों की भूमिकायें महाराजश्री ने अंग्रेजी में लिखी थीं। उनमें उन ग्रंथों का सार, महत्त्व तथा वर्तमान में प्रयोजन स्पष्ट किया गया है। उन सब भूमिकाओं को एकत्र कर यह संस्करण तैयार किया गया है ताकि अंग्रेजी पढ़ने वाले महाराज श्री के विचारों से लाभान्वित हो सकें।